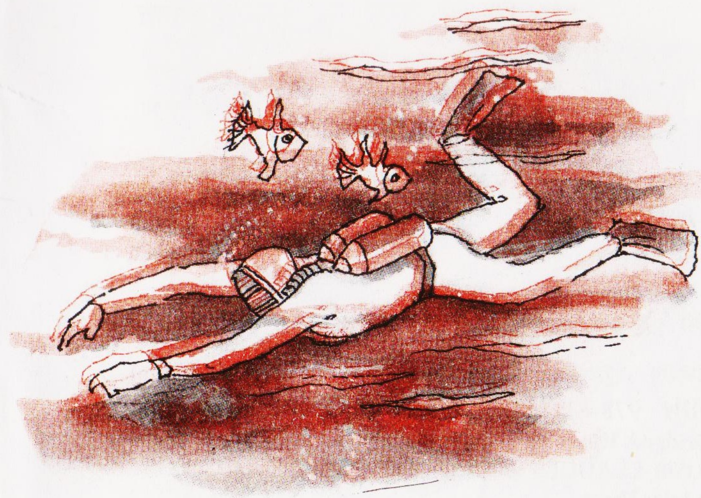
समुद्री दुनिया की रोमांचकारी यात्रा



जुले वर्न के प्रसिद्ध उपन्यास '20,000 लीग्स अण्डर

समुद्री दुनिया की रोमांचकारी यात्रा

जुले वर्न के प्रसिद्ध उपन्यास
'20,000 लीग्स अंडर दि सी'
का सरल हिन्दी रूपान्तर



रूपान्तरकार : श्रीकान्त व्यास

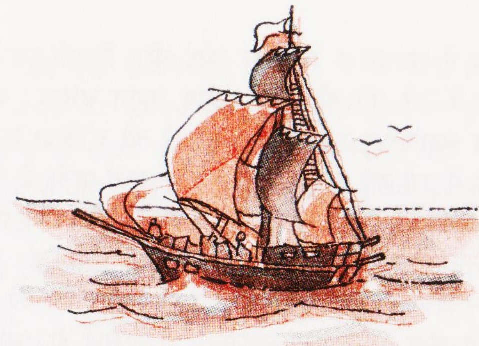
मूल्य : ₹ 40/- (चालीस रुपये)

संस्करण : 2012 © शिक्षा भारती
ISBN : 978-81-7483-010-4
Abridged Hindi Version of
20,000 LEAGUES UNDER THE SEA (Novel)
by Jules Varne
Printed at K.H.B Offset Process, Delhi

शिक्षा भारती, कश्मीरी गेट, दिल्ली-6

समुद्री दुनिया की रोमांचकारी यात्रा





समुद्री दुनिया की रोमांचकारी यात्रा

लगभग 100 साल पहले की बात है कि यूरोप और अमेरिका के जहाज़ी अधिकारियों और जहाज़ों में काम करनेवाले कप्तानों, मल्लाहों और खलासियों वगैरह में बड़ी सनसनी फैली हुई थी। अटलांटिक महासागर या प्रशान्त महासागर की यात्रा से जहाज़ी लोग घबराने लगे थे। जहाज़ियों का कहना था कि समुद्र की सतह के नीचे कोई बड़ी भारी चीज़ बड़ी तेज़ी से तैरती हुई नजर आती है। आकार में यह चीज़ किसी ह्वेल मछली से भी बड़ी और चाल में उससे भी ज़्यादा तेज़ है। रात में समय-समय पर इससे तेज़ रोशनी भी निकलती है। कुछ दिनों बाद तो इस विचित्र चीज़ से कुछ जहाज़ियों की टक्कर होने की खबरें भी मिलने लगीं।

जहाज़ों के कप्तानों ने अपनी डायरियों में इस चीज़ के बारे में तरह-तरह के विवरण लिखे। इसके आकार-प्रकार और चाल-ढाल के बारे में तो सबका एक-सा ही मत था। लेकिन अभी तक कोई यह निश्चय नहीं कर पाया था कि यह चीज़ क्या है। यह कोई जीवधारी है या निर्जीव वस्तु है।

एक बड़े जहाज़ के कप्तान ने बताया कि जब उसका जहाज़ 20 जुलाई, 1866 को आस्ट्रेलिया के पूर्वी तट के पास पहुंचा तो उसे

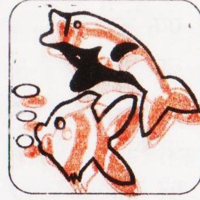
अपने जहाज़ से लगभग 5 मील दूर कोई चीज़ हिलती-डुलती दिखाई दी। कप्तान ने उसे मूंगे की कोई अज्ञात चट्टान समझा। वह समुद्री नक्शे में इस चट्टान की सही स्थिति आंकने की कोशिश कर ही रहा था कि इतने में उसे बड़े ज़ोर की आवाज़ के साथ पानी के दो भयंकर फव्वारे लगभग 150 फुट ऊंचे उठते हुए दिखाई दिए। थोड़ी देर बाद ही यह चट्टान जैसी चीज़ डुबकी मारकर समुद्र में समा गई। इस घटना के ठीक तीन दिन बाद 23 जुलाई को एक दूसरे जहाज़ को यह चीज़ लगभग 700 मील दूर प्रशान्त महासागर में दिखाई दी। लोग चकित थे कि इतनी लम्बी दूरी केवल तीन दिन में ही तय कर ली।

इसके लगभग 15 दिन बाद दो जहाज़ों को यह चीज़ दो हज़ार मील दूर अटलांटिक महासागर में दिखाई दी। इन दोनों जहाज़ों के कप्तानों का कहना था कि यह मछली के आकार का कोई विशाल समुद्री जीव है और उसकी लम्बाई लगभग 350 फुट है। लेकिन यह कोई ह्वेल मछली नहीं हो सकती, क्योंकि सबसे बड़ी ह्वेल मछली भी 180 फुट से ज़्यादा लम्बी नहीं होती। कुछ दिनों तक अखबारों में भी इसके सम्बन्ध में तरह-तरह के लेख निकलते रहे। लेकिन किसी और घटना की सूचना नहीं मिलने के कारण लोग धीरे-धीरे इसके बारे में भूलने लगे।

लेकिन 5 मार्च, 1867 की रात को 'मारेवियन' नाम के एक जहाज़ की एक चट्टान से टक्कर हुई, जबकि समुद्री नक्शे में वहां चट्टान का नामोनिशान नहीं था। अगर यह जहाज़ काफी मज़बूत नहीं होता तो टूट-फूट गया होता और इसके सारे यात्री समुद्र में समा गए होते। यह घटना दिन के करीब हुई थी। जहाज़ के अधिकारियों ने बड़े ध्यान से इसके कारण का पता लगाना शुरू किया, लेकिन उन्हें कोई चीज़ दिखाई नहीं दी। जहाज़ का थोड़ा-सा ही भाग टूटा था। इसके बाद 13 अप्रैल को 'स्कोशिया' नाम का जहाज़ एक विशाल दुर्घटना में फंसा। वह तेज़ी से चला जा रहा था। शाम के लगभग 4 बजे का समय था। अचानक जहाज़ को हल्का-सा धक्का लगा। साधारण यात्रियों को तो मालूम भी

नहीं हुआ, लेकिन एक जहाज़ी डेक पर ज़ोर से चिल्लाया कि जहाज़ डूब रहा है। जहाज़ का कप्तान भागा-भागा नीचे गया तो उसे मालूम हुआ कि जहाज़ के पांचवें तले में सुराख हो गया है और समुद्र का पानी बड़ी तेज़ी से अन्दर आ रहा है। कप्तान ने इंजिन को तुरन्त बन्द कर देने का आदेश दे दिया। जहाज़ के एक मल्लाह ने डुबकी मारी और कुछ ही मिनट बाद उसे मालूम हुआ कि जहाज़ के निचले भाग में लगभग दो गज़ चौड़ा एक तिकोना-सा छेद हो गया है। इस छेद को बन्द नहीं किया जा सका और जहाज़ अधडूबी हालत में ही 300 मील की बाकी यात्रा पूरी करके लिवरपूल पहुंचा। बंदरगाह पर बड़े-बड़े इन्जीनियर भी ठीक से यह बताने में असफल रहे कि यह छेद किस प्रकार हुआ।

लेकिन जहाज़ियों ने कहना शुरू कर दिया कि यह छेद उसी विचित्र वस्तु या समुद्री जीव—वह जो कुछ हो—ने किया है। उनका कहना था कि या तो वह कोई तैरती हुई नुकीली रहस्यमयी चट्टान है या कोई ऐसा भयानक समुद्री जीव है जो अपने मज़बूत और नुकीले सींग से जहाज़ों में टक्कर मारता है। अफवाहें इतनी तेज़ी से फैलने लगीं कि जहाज़ियों ने महासागरों की यात्रा पर जाना ही बन्द कर दिया। यूरोप और अमेरिका के बीच का सम्बन्ध ही टूट गया। जनता ज़ोरों से इसकी जांच की मांग करने लगी। विभिन्न देशों की सरकारें भी इस समस्या पर तेज़ी से विचार करने लगीं। समुद्र विज्ञान के जानकार बड़े-बड़े वैज्ञानिकों और जीवशास्त्रियों में भी इस विषय पर बहस होने लगी कि आखिर यह कौन-सा समुद्री जीव हो सकता है।



2

मैं उन दिनों अपने देश फ्रांस में नहीं, अमेरिका में था। मुझे फ्रांस सरकार ने विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक वस्तुओं के संग्रह के लिए अमेरिका भेजा था। मैं फ्रांस की राजधानी पेरिस में प्राकृतिक इतिहास का प्रोफेसर था। मैं अमेरिका में लगभग छः मास तक अपनी खोज पूरी करता रहा और मार्च, 1867 के अन्त में बहुत-सी बहुमूल्य जानकारी और चीज़ें लेकर न्यूयार्क शहर पहुंचा और फ्रांस वापस लौटने की तैयारी करने लगा। मैंने भी अखबारों में इस अनोखी चीज़ के बारे में पढ़ा था। लेकिन मैं अभी भी उसके सम्बन्ध में कुछ तय नहीं कर पाया था।

जब मैं न्यूयार्क पहुंचा तो वहां के विद्वानों और वैज्ञानिकों में इस समुद्री जीव की चर्चा खूब चल रही थी। उनका कहना था कि यह कोई चट्टान या निर्जीव वस्तु नहीं हो सकती, क्योंकि चट्टान या निर्जीव वस्तु में स्वयं तेज़ी से दौड़ने की शक्ति नहीं होती है। हो सकता है, यह या तो कोई विशाल समुद्री जीव है या फिर कोई पनडुब्बी जहाज़ है। अगर यह कोई पनडुब्बी जहाज़ है तो ज़रूर ही किसी सरकार का होगा, क्योंकि कोई साधारण आदमी ऐसी शक्तिशाली पनडुब्बी कहां से बनवाएगा ! लेकिन इंग्लैंड, फ्रांस, रूस, जर्मनी, इटली, तुर्की, अमेरिका आदि की सरकारों ने बताया कि उनमें से किसी ने भी ऐसे किसी जहाज का निर्माण नहीं किया।

न्यूयार्क पहुंचने पर लोगों ने मुझसे भी एक अनोखी चीज़ के बारे में पूछा। मैंने फ्रांस में कुछ साल पहले 'समुद्रतल के कुछ रहस्य' नामक एक पुस्तक दो खण्डों में प्रकाशित कराई थी। इस पुस्तक ने वैज्ञानिक जगत् में मेरा सम्मान भी बढ़ाया था। लोगों के बहुत कहने पर मैंने एक लेख लिखा, जिसमें मैंने कहा कि अनेक मतों पर विचार करने के बाद यह तो मानना पड़ेगा कि यह कोई बहुत शक्तिशाली जीव है। हमें समुद्र की अधिक-से-अधिक गहराई का पता नहीं है। हमें अब तक यह मालूम नहीं हो सका कि समुद्र की बारह या पन्द्रह मील की गहराई पर कौन-कौन से जीव जीवित रह सकते हैं। हम इस बात की केवल कल्पना ही कर सकते हैं। यह हो सकता है कि यह अनोखा जीव नारह्वाल लगभग 60 फुट लम्बी होती है और इसके एक लम्बा और मज़बूत सींग भी होता है। इस मछली का आकार पाँच गुने से दस गुने तक बड़ा हो तो उसके अनुसार उसकी शक्ति भी बढ़ जायेगी। हो सकता है कि यह जीव साधारण नारह्वाल से काफ़ी बड़ा हो। मेरे इस लेख पर काफी दिनों तक विवाद चलता रहा।

लेकिन अमेरिका की सरकार इस सम्बन्ध में जल्दी ही कुछ-न-कुछ करना चाहती थी। यातायात और व्यापार बन्द होने के कारण वह बहुत चिन्तित थी। अमेरिकी सरकार के आदेश पर 'अब्राहम लिंकन' नामक एक बहुत तेज़ चलने वाला जहाज़ इस खोज-यात्रा पर जाने के लिए तैयार किया जाने लगा। यात्रा की देख-रेख का काम कप्तान फ़रागत को सौंपा गया। अचानक 2 जुलाई को समाचार मिला कि अमेरिका से शंघाई जाने वाले जहाज़ ने तीन सप्ताह पूर्व उत्तरी प्रशान्त महासागर में इस अनोखे जीव को देखा था। बस, सरकार ने कप्तान फ़रागत को आज्ञा दी की वह अधिक-से-अधिक 24 घण्टे में अपनी खोज-यात्रा के लिए रवाना हो जाए।

इस यात्रा के आरम्भ होने के तीन घण्टे पहले मुझे अमेरिका की नौ सेना के सचिव मि. होब्सन का एक पत्र मिला, जिसमें लिखा था, "प्रोफेसर ऐरोनेक्स ! यदि आप 'अब्राहम लिंकन' की यात्रा में सम्मिलित हो सकें तो हमारी सरकार आभारी होगी। आपको इस यात्रा में फ्रांस सरकार का वैज्ञानिक प्रतिनिधि माना जाएगा। कप्तान फ़रागत ने आपके

रहने के लिए इस जहाज़ में एक केबिन सुरक्षित रखा है।'' मैंने अमरीकी सरकार का निमन्त्रण स्वीकार कर लिया और जल्दी से आवाज़ दी, ''कन्सील, कन्सील !''

कन्सील मेरा विश्वासपात्र नौकर था। वह बड़ा बहादुर था और मेरी यात्राओं में मेरे साथ रहा था। वह हालैण्ड का रहनेवाला था और मुझे उस पर बहुत विश्वास था। वह पिछले दस वर्षों से मेरे साथ रहा था और मेरा काम करते-करते उसे विज्ञान की भी कुछ जानकारी हो गई थी। कमरे में आकर उसने कहा, ''हां साहब ! कहिए, क्या हुक्म है ?''

''कन्सील, हम लोग फिर एक यात्रा के लिए चल रहे हैं। तुम दो घण्टे में तैयार हो जाओ। मेरे सारे सफरी बर्तन और कोट, कमीज़ें, मोज़ें वगैरह, जो कुछ रख सको, रख लो। जल्दी करो !''

थोड़ी देर में ही तैयार होकर हम दोनों बन्दरगाह पर पहुंच गए। जहाज़ तैयार खड़ा था। एक मल्लाह ने मुझे कप्तान फ़रागत के पास पहुंचा दिया।

मैंने अपना सामान केबिन में रखवाया। मुझे यह देखकर बड़ी खुशी हुई कि केबिन में मेरे आराम का पूरा इंतजाम किया गया था। सामान रखवाकर मैं जहाज़ छूटने की तैयारियां देखने डेक पर चला गया। ठीक समय पर जहाज ने सीटी देकर अपना लंगर उठा लिया। न्यूयार्क एक नदी के किनारे बसा है। यहां से हडसन की खाड़ी तक पहुंचने में जहाज़ को थोड़ा समय लगा। पहले तो जहाज़ धीरे-धीरे चलता रहा, लेकिन खुले समुद्र में पहुंचने पर उसने अपनी रफ़्तार बढ़ा दी और तेज़ी से दौड़ने लगा।

हमारे जहाज़ का कप्तान एक योग्य आदमी था। सभी जहाज़ी उसका बड़ा आदर करते थे। उसने भी चुन-चुनकर जहाज़ियों को काम पर रखा था। कप्तान ने यह प्रतिज्ञा कर रखी थी कि वे, चाहे जो कुछ हो जाए, उस अनोखे जीव को ज़रूर मारेंगे। उसने जहाज़ियों से कहा था कि

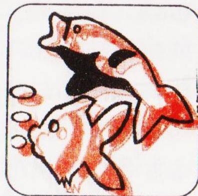
जो कोई पहले-पहल उस अनाखे जीव को देखेगा, उसे दो हज़ार डालर इनाम में दिए जाएंगे। कप्तान ने अपने जहाज़ पर नेडलैण्ड नाम के एक मशहूर हारपूनिये को भी तैनात कर रखा था। नेडलैण्ड हारपून नाम का बरछा फेंककर ह्वेल मछलियों का शिकार करने में बड़ा उस्ताद था। वह कनाडा का रहनेवाला था। कुछ ही दिनों में उससे भी मेरी जान-पहचान हो गई। वह अक्सर ह्वेल के शिकार की कहानियां सुनाया करता था। उसकी आयु करीब चालीस वर्ष की थी और उसने अपना अधिकांश समय समुद्र-यात्रा में ही बिताया था। समुद्री जीवों के बारे में उसकी जानकारी बहुत अच्छी थी। एक दिन मैं जहाज़ की डेक पर खड़ा समुद्र की ओर देख रहा था। थोड़ी देर में नेडलैण्ड भी वहां आ पहुंचा। वह अपना काम खत्म करके सुस्ता रहा था। मेरे पास आकर वह बोला, ''कहिए, प्रोफेसर साहब ! क्या हाल है ? इस विचित्र समुद्री जीव के बारे में आपकी क्या राय है ?''

मैंने कहा, ''नेड ! अभी तक मैं इसके बारे में कुछ तय नहीं कर पाया हूं। वैसा मेरा ख्याल है कि यह कोई नारह्वाल जाति की बहुत बड़ी मछली है, जिसके सींग जहाज़ के पर्दे में घुस जाते हैं।''

मेरी बात सुनकर वह खिलखिलाकर हंस पड़ा और बोला, ''प्रोफेसर साहब ! आप भी अपनी उसी बात पर अड़े हुए हैं। चलिए, अब तो किसी-न-किसी दिन उससे कोई मुठभेड़ होनी ही है, लेकिन मेरा ख्याल है कि वह कोई समुद्री जीव नहीं है। ऐसा कोई समुद्री जीव होता ही नहीं है। मैंने अपनी इतनी बड़ी ज़िन्दगी जहाज़ों पर गुज़ारी है। संसार के सभी महासागरों की मैंने यात्रा की है। आज तक कभी भी ऐसे किसी जीव के बारे में मैंने नहीं सुना। यह बात अलग है कि गहरे समुद्र में रहनेवाला कोई जीव ऊपर आ गया हो। वैसे मेरा मन कहता है कि यह कोई पनडुब्बी ही है।''

7 जुलाई को हमारा जहाज़ प्रशान्त महासागर में दाखिल हुआ। इसी क्षेत्र के उत्तरी भाग में उस समुद्री जीव के प्रकट होने की सूचना

मिली थी। हमारे जहाज़ के खलासियों और अफ़सरों ने अब बहुत होशियारी से समुद्र पर नज़र रखनी शुरू की। सभी रात-दिन दूरबीनों से चारों ओर के समुद्र को देखते रहते थे। कप्तान फ़रागत ने दो हज़ार डालर के इनाम की घोषणा जो कर रखी थी, उसने जहाज़ के हर आदमी के मन में एक लालच पैदा कर दिया था। जब कोई बड़ी मछली दिखाई देती थी तो जहाज़ पर हल्ला मच जाता था और जहाज़ की चाल तेज़ करके उसका पीछा किया जाता था। लेकिन पास पहुंचने पर हमें यह देखकर निराशा होती थी कि वह जीव या तो कोई ह्वेल मछली होती थी या और कोई मामूली समुद्री जीव होता था। तीन महीने हो गए थे। एक-एक दिन एक-एक शताब्दी की तरह बीत रहा था। हमारे जहाज़ ने सारे उत्तरी प्रशान्त महासागर को मथ डाला था। यहां तक कि चीन और जापान के तट का कोई भी कोना बिना ढूंढ़े नहीं बचा था। कुछ ही दिनों में जहाज़ियों में निराशा बढ़ने लगी। खलासियों ने कहना शुरू किया कि इस तरह अपना समय नष्ट करने से क्या लाभ ? अब हमें वापस अमेरिका लौट चलना चाहिए। लोगों के बार-बार मांग करने पर अन्त में कप्तान फ़रागत भी राज़ी हो गया कि अगर 5 नवंबर तक वह जीव हमें दिखाई नहीं देता है तो हम वापस लौट चलेंगे।



3

लेकिन हमारे वापस लौटने का अवसर नहीं आया। 15 नवंबर को हमारा जहाज़ अपनी पूरी रफ्तार से जापान के तट से लगभग 200 मील की दूरी पर आगे बढ़ा जा रहा था। मैं अपने नौकर कन्सील के साथ जहाज़ की छत पर खड़ा क्षितिज की ओर देख रहा था। अचानक शान्त वातावरण

मे नेडलैण्ड की आवाज गूंज उठी, "सामने देखो, वह जीव दिखाई दे रहा है !"

नेडलैण्ड की आवाज़ सुनते ही जहाज़ के सभी लोग नेडलैण्ड की ओर दौड़ पड़े। यहां तक कि इंजिन चलाने वाले भी अपने इंजिन रोककर ऊपर आ गए। जहाज़ को रोकने का आदेश दे दिया गया था। इस समय जहाज़ अपनी तेज चाल के कारण हिल रहा था। चारों ओर घना अंधेरा छाया हुआ था। मेरा दिल तेज़ी से धड़कने लगा। मुझे लगा कि कहीं नेडलैण्ड से गलती न हुई हो। लेकिन वह जिस चीज़ को बता रहा था, उसे मैंने भी देखा।

जहाज़ से लगभग 1200 फुट दूर समुद्र की तलहटी एक तेज़ रोशनी से चमचमा रही थी। ऐसा जान पड़ता था कि वह अनोखा जीव तेज़ रोशनी से अपने ऊपर के अथाह जल को प्रकाशित कर रहा है। ऐसी ही रोशनी का वर्णन विभिन्न कप्तानों ने अपनी रिपोर्टों में किया था।

इतने में अफसर ने चिल्लाकर कहा, "यह तो फासफोरस के टुकड़ों का ढेर मालूम होता है।"

लेकिन मैंने पूरे विश्वास के साथ कहा कि नहीं, यह बात नहीं है। यह रोशनी निश्चय ही बिजली की है। देखो, यह हमारी ओर बढ़ रही है।

यह देखकर जहाज़ में शोर मच गया। कप्तान ने चीखकर कहा, "शान्त हो जाओ। यह समय शोर मचाने का नहीं है। सब चुप होकर अपना काम करो। पतवार दुरुस्त करो। जहाज़ उल्टा चलाओ !"

हमारा जहाज़ पीछे की ओर हटने लगा। लेकिन वह अनोखा जीव दूनी चाल से हमारी तरफ बढ़ता आ रहा था।

डर की अपेक्षा आश्चर्य से मेरी आवाज़ बन्द थी। मैं एक पुतले की तरह चुपचाप खड़ा था। ऐसा लगता था जैसे उस जीव ने हम लोगों के ऊपर विजय पा ली थी। उसने जहाज़ का एक चक्कर लगाया। हमारा जहाज़ 14 मील की चाल से पीछे हट रहा था। इसके बाद वह जीव

जहाज़ से दो या तीन मील दूर चला गया। वह रेल के इंजिन की भांति चमकदार भाप उड़ा रहा था। अचानक भयानक चाल से वह फिर जहाज़ की ओर झपटा और लगभग 20 फुट की दूरी पर रुक गया। उससे जो रोशनी निकल रही थी वह भी एकाएक बुझ गई। इसके बाद वह जहाज़ के दूसरी ओर फिर प्रकट हुआ। मुझे यह समझते देर नहीं लगी कि उसकी टक्कर से जहाज़ को काफी हानि पहुंच सकती थी। मुझे अपने जहाज़ की गतिविधि पर बड़ा आश्चर्य हुआ। उस जीव पर हमला करने की बजाय हमारा जहाज़ उससे बचने की कोशिश कर रहा था। मैंने कप्तान फ़रागत से इसका कारण पूछा तो उसने बहुत शान्ति से जवाब दिया, "प्रोफेसर ! जो जीव हमारे सामने है, मैं नहीं जानता कि उसमें कितनी शक्ति है। रात के अंधेरे में मैं इससे नहीं लड़ना चाहता। दिन का प्रकाश होते ही हम अपनी चाल बदल देंगे।"

उस रात कोई भी जहाज़ी सो नहीं सका। उस जीव की चाल का मुकाबला न कर सकने के कारण हमारे जहाज़ ने अपनी चाल आधी कर दी थी। लेकिन उस जीव ने भी हमारी नकल की। ऐसा लगता था जैसे वह मैदान छोड़ने के लिए राज़ी नहीं था। आधी रात के समय वह अचानक गायब हो गया। फिर लगभग एक बजे एक तेज़ सीटी सुनाई दी, जैसे पानी की बहुत तेज़ धारा छूट रही हो। रात के दो बजे हमारे जहाज़ से कोई पांच मील की दूरी पर वह तेज़ रोशनी एक बार फिर दिखाई दी। हवा और समुद्र के शोर के बीच भी हमने उसकी सांस लेने की आवाज़ साफ सुनी। यह जीव जब समुद्र की सतह पर आकर सांस लेता था तो इसके फेफड़ों में घुसती हवा के कारण ऐसा लगता था, जैसे दो हार्स-पावर के इंजिन के सिलेंडर से भाप निकल रही हो।

किसी तरह रात बीती। सवेरा होते ही मछलियों के शिकार के अस्त्र-शस्त्र तैयार किए गए। दूर तक हारपून फेंकनेवाली बंदूक तैयार की गई। इससे एक मील तक हारपून फेंका जा सकता था। चारों ओर कोहरा छाया हुआ था। सुबह 8 बजे कोहरा कुछ-कुछ साफ होने लगा

तो अचानक वह जीव हमें फिर से दिखाई दिया।

नेडलैण्ड ने आवाज लगाई और सभी लोग दौड़कर जहाज़ की डेक पर जमा हो गए। लगभग डेढ़ मील दूर उस जीव का बड़ा काला शरीर पानी से लगभग एक गज़ ऊपर तैरता हुआ दिखाई दिया। शायद उसकी पूंछ समुद्र में बड़ी तेज़ी से हिल रही थी, इसलिए उसकी पिछली ओर बड़ी तेज़ी से झाग उठ रहे थे। हमारा जहाज़ धीरे-धीरे उस जीव के पास चला। कुछ पास पहुंचने पर मैंने देखा कि उसकी लम्बाई लगभग 150 फुट थी। अचानक उसके शरीर के सूराखों से पानी तथा भाप मिली हुई फुहार निकली और कोई पचास गज़ ऊंची उड़ गई। हम लोगों ने समझा कि इस तरह शायद वह सांस ले रहा है। मैं यह तय नहीं कर सका कि यह जीव किन समुद्री जन्तुओं की जाति का है। बड़े समुद्री जीवों की तीन जातियां होती हैं–(1) ह्वेल, (2) कचलाट, और (3) डालफिन। ह्वेल डालफिन के परिवार की ही होती है।

इतने में कप्तान ने जहाज़ के एक अफसर को अपने पास बुलाया और पूछा, "क्या तुम्हारे इंजिन की भाप तैयार है ?"

अफसर ने जवाब दिया, "जी हां, बिलकुल तैयार है।"

कप्तान ने कहा, "ठीक है। आग और अच्छी तरह से जला लो और जहाज़ को खूब तेज़ दौड़ाओ।"

जहाज़ के तीनों अफसर कप्तान के इस आदेश से बड़े खुश थे। मुठभेड़ का समय आ गया था। देखते-देखते जहाज़ की चिमनियां काला धुआं उड़ाने लगीं। सभी इंजिनों के अपनी पूरी ताकत से चलने के कारण जहाज़ की छत हिलने लगी। जहाज़ तेज़ी से उस जीव की ओर दौड़ा।

वह जीव जहाज़ को अपनी ओर आता देखकर भी चुपचाप अपनी जगह पर खड़ा रहा। जब जहाज़ कुछ पास पहुंच गया तो वह जीव तेज़ी से भागने लगा। वह आगे बढ़ता जा रहा था और जहाज़ उसका पीछा कर रहा था। लगभग पौन घंटे की दौड़ के बाद भी हमारा जहाज़ उसके बिलकुल पास नहीं पहुंच सका। कप्तान ने झुंझलाकर नेडलैण्ड

को पुकारा, " क्यों नेडलैण्ड, तुम्हारा क्या ख्याल है ? इस तरह तो यह पकड़ में नहीं आएगा। क्या नावें उतारने से कुछ काम बन सकता है ?"

नेडलैण्ड ने उत्तर दिया, "नहीं साहब ! इससे कोई फायदा नहीं होगा। जहाज़ की चाल और तेज़ करवाइए। मैं बिलकुल आगे खड़ा हो जाऊंगा और अगर मुझे मौका मिला तो मैं उस पर हारपून फेंकूंगा।"

कप्तान बोला, "ठीक है नेड ! इंजीनियर, जहाज़ को और तेज़ दौड़ाओ।"

नेडलैण्ड अपनी जगह चला गया। जहाज़ ने अपनी चाल दूनी कर दी। लेकिन उस जीव ने भी उसी तेज़ी से भागना शुरू किया। एक घण्टे की लगातार दौड़ के बाद भी हमारा जहाज़ उस जीव के पास नहीं पहुंच सका। कभी-कभी फासला कुछ कम हो जाता था तो नेडलैण्ड हारपून चलाने के लिए अपना हाथ उठा लेता था। लेकिन तभी फौरन वह जीव बड़ी तेज़ी से आगे भाग निकलता था। अब कभी-कभी वह हमारे जहाज़ का पूरा चक्कर लगाता था और फिर आगे दौड़ने लगता था।

अन्त में कप्तान ने कहा, "यह तो मेरे जहाज़ से भी तेज़ दौड़ता है। अच्छा, देखता हूं, तोप के गोले से भी आगे जा सकता है या नहीं ?"

तुरन्त जहाज़ की तोप भर दी गई और निशाना लगाकर गोला दाग दिया गया। लेकिन गोला उससे कई गज़ आगे पानी में जा गिरा।

कप्तान ने झुंझलाकर कहा, "दूसरी बार कोशिश करो। जो कोई इस जीव को तोप से मारेगा, उसे पांच सौ डालर इनाम में दिए जाएंगे।"

भूरी दाढ़ीवाले एक तोपची ने काफी देर तक निशाना साधकर फिर गोला दाग दिया। सभी जहाज़ियों में हल्ला मच गया। गोला उस जीव की पीठ पर लगा और फिसलकर उछलता हुआ काफी दूर पानी में जा गिरा। कप्तान ने चिल्लाकर कहा, "अरे, यह तो कोई जीव नहीं, कोई पिशाच मालूम होता है। लगता है, यह छः इंच मोटे लोहे से ढका है। मैं इसे जरूर पकड़ूंगा। मेरा जहाज़ रहे या टूट जाए।"

अब फिर से दौड़ शुरू हो गई। लेकिन लगता था, जैसे वह जीव थकना जानता ही नहीं था। धीरे-धीरे शाम हो गई, और अंधेरा बढ़ने लगा। अचानक उस जीव ने डुबकी लगाई और पानी में गायब हो गया। फिर रात में लगभग 11 बजे वह बिजली की रोशनी एक बार फिर दिखाई पड़ी। लगता था, दिन-भर दौड़ से थककर वह जीव लहरों के झूले में सो रहा है। कप्तान ने जहाज़ को धीरे-धीरे आगे बढ़ाने का हुक्म दिया। नेडलैण्ड अपनी जगह पर तैयार खड़ा था। डेक पर बिलकुल शांति छाई हुई थी। जब हमारा जहाज़ उसके पास पहुंचने लगा तो उस जीव की रोशनी इतनी तेज़ हो गई कि हमारी आंखें चौंधिया गईं। जब जहाज़ उससे 20 फुट के अन्तर पर रह गया तो नेडलैण्ड ने अपना हारपून चला दिया। वह निशाने पर जा बैठा। बहुत ज़ोर की आवाज़ हुई। लगा, जैसे हारपून किसी कड़ी चीज़ से टकराया है। अचानक उस जीव की आंखों से निकलनेवाली रोशनी बुझ गई। साथ ही, पानी के दो बहुत तेज़ फव्वारे डेक पर गिरने लगे। इन फव्वारों का पानी इतना तेज़ था कि कई आदमी डेक पर गिर पड़े और बहुत-सी चीज़ें टूट गईं। इसके बाद एक भयानक धक्के ने जहाज़ को झकझोर डाला। मैं डेक के किनारे खड़ा था। अपने को संभाल न सकने के कारण अचानक मैं समुद्र में जा गिरा।

जब मैं किसी तरह हाथ-पैर मारकर पानी के ऊपर आया तो मैंने देखा कि जहाज़ से मैं काफी दूर निकल आया हूं। उसकी रोशनी धीमी दिखाई दे रही थी। पता नहीं किसी ने मुझे जहाज़ से गिरते हुए देखा भी था या नहीं। मैं मदद के लिए चिल्लाने लगा। मेरी पोशाक ने मेरे हाथ-पैर पूरी तरह से जकड़ रखे थे। कपड़ों में पानी भरने के कारण मैं बड़ी मुश्किल से अपने-आपको डूबने से बचा रहा था। लहरों के थपेड़ों के कारण मैं जहाज़ से और भी दूर होता जा रहा था। मेरे मुंह में पानी भर गया और मैं छटपटाने लगा। ऐसे ही समय में न जाने किसने मेरे कपड़े पकड़कर मुझे पानी से निकालकर एक बार ऊपर उठा दिया।

मुझे कन्सील की आवाज़ सुनाई पड़ी, ''साहब, आप मेरे कंधे का सहारा ले लीजिए, इस तरह आप आसानी से तैर सकेंगे।''

कन्सील की आवाज़ सुनकर मेरी हिम्मत बढ़ी। मैंने उसके कंधे का सहारा लेकर कहा, ''कन्सील, जहाज़ का क्या हुआ ?''

''साहब, जहाज़ का अब भगवान ही मालिक है। मैंने कूदते समय जहाज़ियों को कहते सुना था कि पतवार और चरखी दोनों ही नष्ट हो गई हैं। अब जहाज़ तो यहां कहीं भी दूर तक दिखाई नहीं दे रहा है। हमें रात-भर इसी तरह तैरते रहना पड़ेगा। हो सकता है, सुबह कोई रास्ता निकले।''

मैं अपने ज़माने में खासा अच्छा तैराक रहा हूं, लेकिन उस वक्त अंधेरे में गहरे समुद्र में तैरते-तैरते मेरे हाथ-पैर सुन्न पड़ने लगे। मैं बुरी तरह से थक गया था और बड़ी मुश्किल से अपना सिर पानी के ऊपर बनाए रख रहा था।

जहाज़ अब भी हमें दिखाई दे रहा था, लेकिन वह हमसे लगभग 5 मील दूर था। मुझमें तो अब चिल्लाने की भी ताकत नहीं थी, लेकिन कन्सील बराबर मदद के लिए चिल्ला रहा था। थोड़ी देर में मैं बेहोश हो गया।

जब मैंने आंखें खोलीं तो आकाश में चन्द्रमा निकला हुआ था। मैंने अपने-आपको लोहे के तख्ते जैसी किसी चीज़ पर लेटे हुए पाया। कोई मेरे शरीर पर मालिश कर रहा था। मैंने धीमे स्वर में कहा, ''कन्सील !''

फिर मुझे दिखाई दिया कि मेरे पास कन्सील तो था ही, उसकी बगल में एक और आदमी भी था।

मैंने उसको तुरंत पहचान लिया और ऊंची आवाज़ में कहा, ''अरे, नेडलैण्ड ! क्या तुम भी समुद्र में आ गिरे थे ?''

वह बोला, ''जी हां। लेकिन मेरा भाग्य आपसे अच्छा है। मैं तुरंत ही एक तैरते हुए टापू पर चढ़ आया था और अगर आप कुछ अधिक

जानना चाहते हैं तो मैं बताऊं कि यह वही टापू—और सच पूछिए तो यह टापू नहीं, बल्कि वही जीव है, जिसकी तलाश में हम लोग अमरीका से इतनी दूर आए हैं।''

मैं चौंककर उठता हुआ बोला, ''ऐं, क्या कह रहे हो ?''

''जी हां, मैं तो पहले ही समझ गया था कि मेरा हारपून इसकी खाल में क्यों नहीं चुभा। यह जीव लोहे की प्लेटों का बना हुआ है। मैंने अच्छी तरह जांचकर देख लिया है। यह कोई जीव नहीं है। यह फौलाद की चादर से बनी हुई कोई पनडुब्बी है। यह मछली की तरह लम्बी है। और मैं इतनी देर से इसकी छत को पकड़कर लटका रहा हूं।''

मैंने कहा, ''अगर यह कोई पनडुब्बी है तो इसके अन्दर इसको चलाने की मशीन भी ज़रूर होगी और उस मशीन को चलानेवाले खलासी भी अवश्य होंगे ?''

नेडलैण्ड ने कहा, ''जी हां, ज़रूर होने चाहिए, लेकिन मुझे तीन घंटे से ज़्यादा का समय हो गया। अभी तक इसने डूबने या आगे बढ़ने का नाम तक नहीं लिया।''

मैंने कहा, ''लेकिन हम जानते हैं कि इसकी चाल बहुत तेज़ है। ऐसी चाल पैदा करने के लिए मशीन ज़रूरी है और उस मशीन को चलानेवाले बहुत-से आदमी भी होंगे। इसलिए मुझे आशा है कि अब हम लोग सुरक्षित हैं। और हमने इस विचित्र जीव का भेद कुछ-कुछ पा लिया है।''

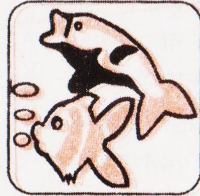
इसी बीच उस विचित्र यंत्र से भाप निकलने लगी। चर्खी पीछे की ओर घूमने लगी और पनडुब्बी आगे बढ़ चली। हम लोग जिस भाग पर थे वह पानी से लगभग तीन फुट बाहर था। हमने उसे कसकर पकड़ रखा था। गनीमत यह थी कि उस समय पनडुब्बी तेज़ी से नहीं चल रही थी। नेडलैण्ड ने धीरे से कहा, ''जब तक यह पनडुब्बी पानी के ऊपर चल रही है तभी तक कुशल है। जैसे ही यह गोता लगाएगी, हमारी मृत्यु निश्चित है।''



टापू के धोखे में हम उस अजीब चीज़ पर चढ़ गए।

नेडलैण्ड की बात बिलकुल सही थी। इसलिए अब हमारे लिए यह ज़रूरी हो गया कि जो कोई भी आदमी इस मशीन के अन्दर है, उसे हम लोगों के ऊपर होने की सूचना दी जाए। बहुत ढूंढ़ने पर भी हमें उसमें कोई छेद नज़र नहीं आया। फौलाद की मोटी-मोटी चद्दरों को मज़बूत पेचों से जड़ा हुआ था। अन्दर जाने का कोई दरवाज़ा ज़रूर होगा, लेकिन हमें वह नहीं मिल सका। हम लोग हाथ-पैर पटककर अन्दर वालों को सूचना देने की कोशिश करने लगे। लेकिन हमें कोई सफलता नहीं मिल सकी।

कप्तान फ़रागत की ओर से बचाए जाने की आशा अब हम छोड़ चुके थे। अब हम पश्चिम की ओर जा रहे थे। पनडुब्बी उस समय बारह मील प्रतिघंटा की चाल से आगे बढ़ रही थी। किसी तरह रात बीती। सवेरा होते ही कोहरे ने हम लोगों को ढक लिया। थोड़ी ही देर बाद कोहरा भी साफ हो गया। अचानक एक आवाज़ हुई। ऐसा लगा जैसे किसी ने दरवाज़े का कोई लोहे का डंडा हटाया हो। पनडुब्बी के बीच के भाग में लगा लोहे का यंत्र दीवार की तरह खुला और ऊपर की ओर उठा। छेद में से एक आदमी बाहर आया। वह हम तीनों को देखकर चीख उठा और दरवाज़ा बन्द करके नीचे चला गया। थोड़ी देर बाद आठ हट्टे-कट्टे आदमी बाहर आए। वे नकाबपोश थे। वे हमें घसीटकर पनडुब्बी के अन्दर ले गए।



4

अन्दर ले जाकर उन्होंने हमें एक अंधेरी कोठरी में पटक दिया और फिर वे दरवाज़ा बन्द करके वहां से चले गए। कोठरी में घना अंधेरा था। हमारी समझ में नहीं आ रहा था कि हम कहां आ पड़े हैं। नेडलैण्ड बहुत निराश हो रहा था और कह रहा था, ''चाकू अब भी मेरे पास है। जो बदमाश मेरे शरीर को हाथ लगाएगा, उसके मैं दो टुकड़े कर दूंगा।''

कन्सील कह रहा था, ''चाकू तो मेरे पास भी है। लेकिन नेडलैण्ड, इस तरह गुस्सा करने से काम नहीं चलेगा। हम लोग सिर्फ तीन हैं। ज़ाहिर है, इतनी बड़ी पनडुब्बी को चलानेवालों की संख्या बहुत ज़्यादा होगी। हमें अभी से इन लोगों से लड़ाई नहीं मोल लेनी चाहिए। ये कोई समुद्री डाकू मालूम होते हैं। हमें बहुत सावधानी के साथ यह देखना चाहिए कि यहां से बच निकलने का कोई रास्ता भी है या नहीं।''

लगभग आधे घंटे बाद कोठरी की छत में लगे हुए एक पालिशदार शीशे के गोले से बिजली की तेज़ रोशनी निकली। कोठरी का अंधेरा दूर हो गया। कमरे में एक मेज़ और पांच स्टूल रखे हुए थे। अदृश्य दरवाज़े विचित्र ढंग से बन्द थे। हमें कोई भी शब्द सुनाई नहीं पड़ता था। वहां यह भी पता लगाना मुश्किल था कि पनडुब्बी चल रही है या स्थिर है, अथवा वह समुद्र की सतह पर है या अन्दर गहराई में !

कुछ ही क्षणों बाद पेच खुलने और लोहे का डंडा खिंचने की आवाज़ आई। दरवाज़ा खुला। उसमें से दो आदमी प्रकट हुए। उन्होंने समुद्री जलजीवों की खाल के कपड़े और जूते पहने हुए थे। उनमें से एक आदमी कुछ नाटा और बड़े सिरवाला था। वह खूब तगड़ा था और उसके चेहरे से मालूम होता था कि वह कोई ज़िम्मेदार आदमी है। उसका माथा चौड़ा, नाक सीधी और आंखें चमकीली थी। उसके जैसा शानदार आदमी मैंने पहले कभी नहीं देखा था। मुझे ऐसा लगा कि यही आदमी इस पनडुब्बी का कप्तान है। वह थोड़ी देर तक हम लोगों को देखता रहा, फिर मुड़कर अपने साथी से ऐसी भाषा में बात करने लगा, जिसकी ज़रा भी समझ मुझे नहीं आई। उसके साथी ने सिर हिलाकर दो-तीन शब्दों में कुछ उत्तर दिया। इसके बाद उस व्यक्ति के चेहरे से ऐसा मालूम

पड़ा, जैसे वह मुझसे कुछ पूछ रहा हो। मैंने फ्रांसीसी भाषा में उत्तर दिया और शुरू से अब तक का हाल बता दिया। मेरी बात सुनकर भी उसने कोई जवाब नहीं दिया।

इस पर नेडलैण्ड बोला, ''शायद ये लोग फ्रांसीसी नहीं समझते। मैं इन्हें अंग्रेज़ी में सारी बात समझा देता हूं।'' यह कहकर उसने हमारा सारा हाल अंग्रेज़ी में कह सुनाया। इस पर भी वे दोनों आदमी चुपचाप खड़े हमें देखते रहे।

अन्त में, कन्सील ने जर्मन भाषा में तीसरी बार हम लोगों का पूरा हाल कह सुनाया। लेकिन वे दोनों आदमी हममें से किसी से भी एक शब्द नहीं बोले और थोड़ी देर बाद चुपचाप वहां से चले गए। दरवाज़ा बन्द कर दिया। थोड़ी देर बाद दरवाज़ा पुनः खुला और एक रसोइया अन्दर आया। वह भी पहले वालों की तरह ही कपड़े पहने था और हम तीनों के लिए भी वैसे ही कपड़े लाया था। इसी बीच एक दूसरा आदमी मेज़ पर मेज़पोश बिछा गया। हम लोगों ने जल्दी से कपड़े पहने। कन्सील ने कहा, ''अब कुछ उम्मीद हो रही है।''

नेडलैण्ड ने उत्तर दिया, ''अरे, मैं शर्त लगाकर कहता हूं कि यहां खाने लायक कोई चीज़ नहीं मिलेगी। कछुए का जिगर और समुद्री कुत्ते की बोटियों के अलावा यहां कुछ नहीं मिल सकेगा।''

इतने में रसोइया फिर आया। उसने मेज़ पर विभिन्न प्रकार के भोजन की तश्तरियां सजाकर रखीं। सभी तश्तरियां चांदी की थीं। हम लोग तुरन्त भोजन पर टूट पड़े। खाने की सभी चीज़ें बड़ी स्वादिष्ट बनी थीं। परन्तु मैं उनको जान नहीं पाया कि वे क्या हैं। प्यालों में शराब की जगह शुद्ध ताज़ा पानी भरा था। मैंने खाते समय एक बात पर ध्यान दिया कि सभी बर्तनों के किनारे पर अंग्रेज़ी का 'एन' अक्षर बना हुआ था। यह शायद उसी व्यक्ति के नाम का चिह्न था जो इस समुद्री सल्तनत पर राज कर रहा था।

हम तीनों ने खूब डटकर खाना खाया।

पिछली रात हम लोग मौत से लड़ रहे थे और बहुत थके हुए थे। खाना खाकर हम लोग वहां एक चटाई पर लेटकर सो गए।

पता नहीं मैं कितनी देर सोया। जब सोकर उठा तो मेरी सारी थकावट दूर हो चुकी थी। अपने साथियों में मैं ही सबसे पहले जगा था। हमारी कोठरी की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। थोड़ी देर में साफ हवा का एक झोंका आया। हवा में नमकीन जल की गन्ध थी। मेरे फेफड़ों में ताज़ी हवा भर गई। मुझे लगा कि इस समय पनडुब्बी समुद्र की सतह पर निकल आई है और ताज़ी हवा खींच रही है। इसकी सांस की आवाज़ मैंने पहले जहाज़ पर से भी सुनी थी। शायद वह पनडुब्बी अपनी ज़रूरत की हवा खींचकर फिर पानी में गोता लगा लेती है।

थोड़ी देर बाद मेरे दोनों साथी भी जाग उठे। हम लोग अपने भविष्य के बारे में सोचने लगे। इस समुद्री जेलखाने से भाग निकलने की कोई उम्मीद नहीं थी। चारों ओर लोहे की मज़बूत दीवारें थीं और हम भागकर जाते भी कहां ? हमारे पास यह जानने का कोई साधन नहीं था कि हम इस समय संसार के किस समुद्र में हैं। इस स्थिति से हम लोग निराश हो रहे थे और साथ ही हमें झुंझलाहट भी हो रही थी। इसीलिए जब दरवाज़ा खुला और रसोइया अन्दर आया तो नेडलैण्ड उस पर टूट पड़ा और उसे फर्श पर पटककर उसका गला दबाने लगा। रसोइया छटपटाने लगा। मैं और कन्सील दोनों उसे नेडलैण्ड के पंजे से छुड़ाने का प्रयत्न करने लगे। इस बीच कोठरी में आकर किसी ने शुद्ध फ्रांसीसी भाषा में कहा, ''नेडलैण्ड, तुम इस आदमी को छोड़ दो और दूर खड़े हो जाओ ! और प्रोफेसर, तुम मेरी बात सुनो !''

यह और कोई नहीं, वही कल वाला लम्बा और सुन्दर आदमी था। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वह इतनी साफ फ्रांसीसी बोल सकता था। इसका मतलब है कि कल हमने जो कुछ कहा, वह सब उसने समझ लिया था। वह अपने हाथ छाती पर बांधकर हम लोगों को कुछ देर तक ध्यान से देखता रहा और फिर शांत और धीमी आवाज़ में

बोला, "महाशय ! मैं जर्मन, फ्रेंच, अंग्रेज़ी और लैटिन सभी भाषाएं बोल सकता हूं। मैंने तुम लोगों की बातों का कल ही उत्तर दे दिया होता, लेकिन मैं ज़रा विचार करना चाहता था। मुझे तुम्हारी बातचीत से यह भी मालूम हो गया है कि तुममें से किसका क्या नाम है और कौन क्या है ? मैं कल से तुम लोगों के बारे में सोचता रहा हूं, लेकिन अभी तक यह तय नहीं कर सका हूं कि तुम्हारे सम्बन्ध में हमें क्या करना चाहिए।"

कुछ देर चुप रहने के बाद वह बोला, "बात यह है कि घटनाक्रम से तुभ ऐसे आदमी के पास आ पहुंचे हो, जो मंनुष्य-जगत् से अपना नाता तोड़ चुका है। तुम मुझे परेशान करने के लिए ही यहां आए हो।"

मैंने कहा, "लेकिन हमारा आना जान-बूझकर नहीं हुआ है। हम तो दुर्घटना में फंसकर आपकी पनडुब्बी में आ पहुंचे हैं।"

कप्तान ज़रा सख्ती से बोला, "जान-बूझकर नहीं हुआ ? क्या तुम लोग अपने जहाज़ 'अब्राहम लिंकन' पर सवार होकर यों ही हर समुद्र में हमारा पीछा नहीं करते रहे ? क्या तुम्हारी तोपों ने मेरी पनडुब्बी पर जान-बूझकर गोले नहीं बरसाए ? क्या मिस्टर नेड ने जान-बूझकर हारपून नहीं चलाया था ?"

मैंने जवाब दिया, "शायद आपको पता नहीं कि आपकी इस पनडुब्बी से यूरोप और अमरीका में किस तरह की हलचल मची हुई है। जब हमारा जहाज़ आपकी पनडुब्बी का पीछा कर रहा था, उस समय जहाज़ के सभी लोग इस विश्वास में थे कि वे किसी भयंकर समुद्री जीव का पीछा कर रहे हैं !"

कप्तान के चेहरे पर एक हल्की मुस्कान दौड़ी। वह बोला, "क्या तुम लोग इसे पनडुब्बी समझते तो इसका पीछा करना छोड़ देते ? असल में तुम्हारा समाज मेरा शत्रु है और एक तरह से मैं भी तुम्हारा शत्रु हूं। लेकिन इतना याद रखो कि अब तक मैंने जान-बूझकर किसी का भी कोई नुकसान नहीं किया है। मैं अपनी पनडुब्बी को तुम्हारे समुद्री किनारों और जहाज़ से दूर ही रखता हूं। लेकिन पता नहीं, क्यों तुम

लोग मेरे पीछे पड़े हुए हो। तुम लोगों को आश्रय देने की मुझे कोई आवश्यकता नहीं। तुम लोगों को अगर मैं उसी छत पर, जहां तुमने शरण ली थी, छोड़ देता तो मुझे कोई बुरा नहीं कह सकता था और तुम भी अब तक ज़िन्दा न रहते।"

मैंने कहा, "लेकिन यह बरताव तो सभ्य मनुष्यों का नहीं है।"

कप्तान ने चिढ़कर जवाब दिया, "मैं उस प्रकार का सभ्य मनुष्य नहीं हूं। मैं तुम लोगों के समाज को छोड़ चुका हूं। इसलिए तुम्हारे नियमों का पालन मेरे लिए ज़रूरी नहीं। अतः इतना याद रखना कि समाज के नियमों के बारे में आगे मुझे कुछ न कहना। फिर भी दया और धर्म की शिक्षा मैंने पाई है, इसलिए मैं तुम्हें अपनी पनडुब्बी में रहने का निमंत्रण देता हूं। यहां तुम स्वतन्त्र रह सकते हो। बस एक शर्त है। यहां से भागने की तुम लोग कोशिश न करना। अब तुममें से कोई भी धरती पर वापस नहीं लौट सकेगा। मैं तुमको उस समाज में वापस नहीं जाने दूंगा, जिसे मैं अपना शत्रु समझता हूं। तुम लोग हमारे युद्ध के कैदी हो। हां, इस पनडुब्बी में तुम लोगों को पूरी स्वतन्त्रता मैं दे सकता हूं। हम लोग जैसे यहां रहते हैं, वैसे ही तुम भी रहो और कुछ दिनों में तुम देखोगे कि यहां का जीवन धरती के जीवन की अपेक्षा अधिक सुखमय है।"

इसके बाद कप्तान ने मेरी ओर घूमकर कहा, "प्रोफेसर ऐरोनेक्स, यहां रहने से तुम्हारे साथी प्रसन्न हों या नही हों, लेकिन तुम जरूर प्रसन्न रहोगे। मैं तुम्हें जानता हूँ। तुम एक विद्वान् व्यक्ति हो। तुमने सागर के रहस्य पर जो पुस्तक लिखी है, उसे मैं अक्सर पढ़ा करता हूं। तुमने इस पुस्तक में उतनी ही बातें लिखी हैं, जितनी विज्ञान द्वारा जानी जा सकी हैं। तुम मेरी पनडुब्बी में रहकर ऐसी चीज़ें देख सकोगे, जिन्हें मनुष्य ने अब तक नहीं देखा है। मैं इस पनडुब्बी के सारे रहस्य तुम्हें बताने को तैयार हूं।"

कप्तान की बातें सुनकर थोड़ी देर के लिए मैं चक्कर में पड़ गया।

मेरी समझ में नहीं आया कि इसका क्या जवाब दूं। मेरे साथी मेरा मुंह देख रहे थे। मैं अब यह अच्छी तरह से समझ गया था कि यह कप्तान कोई मामूली आदमी नहीं है। यह बहुत ताकतवर है और इससे बहस करना या इसका विरोध करना बेकार है। मैंने उनसे पूछा, ''कप्तान साहब, आपका नाम क्या है ?''

उसने उत्तर दिया, ''तुम मुझे कप्तान नेमो कह सकते हो। अच्छा, अब मैं तुम्हें और तुम्हारे साथियों को अपनी पनडुब्बी के यात्री समझूंगा। मुझे उम्मीद है कि तुम लोग मेरी बातों का ध्यान रखोगे।''

इसके बाद उसने आवाज़ दी। रसोइया कमरे में आया। कप्तान ने उसे अपनी ही भाषा में कुछ आदेश दिया और फिर नेडलैण्ड और कन्सील से कहा, ''तुम दोनों इसके साथ जाओ। तुम्हारे कमरे में तुम्हारा खाना तैयार है। और प्रोफेसर ! आप मेरे साथ आइए।''

मेरे साथी रसोइए के साथ चले गए और मैं कप्तान के पीछे-पीछे चलने लगा।

कोठरी के बाहर एक पतला गलियारा था। हम केवल बारह गज़ ही चले थे कि सामने एक दूसरा दरवाज़ा खुला। यह एक अत्यंत सुसज्जित खाने का कमरा था। एक ओर कीमती लकड़ी की अलमारी थी, जिसमें शीशे के बढ़िया खिलौने और चीनी के महंगे बर्तन सजे हुए थे। बीच में एक सुन्दर-सी मेज़ के एक ओर पड़ी कुर्सी पर नेमो बैठा और दूसरी पर मुझे बैठने का इशारा किया। भोजन आरम्भ हुआ। खाने की सभी चीज़ें स्वादिष्ट तो थीं, पर मैं उन्हें पहचान नहीं पाया। यह देखकर नेमो ने कहा, ''आप इन चीज़ों में बहुतों को अभी नहीं जानते, लेकिन आप बिना किसी डर के इन्हें खाइए। ये सभी पौष्टिक चीज़ें हैं। काफी समय हुआ, मैंने दुनिया का खाना छोड़ दिया है। मेरी इस नाव में जो भी लोग हैं, वे सब यही खाना खाते हैं। मेरी सारी ज़रूरतें समुद्र ही पूरी करता है। समुद्र में जाल फेंककर हम लोग खाने की चीज़ें बटोरते हैं। कभी-कभी मैं समुद्री जंगलों में शिकार खेलने भी जाता हूं। समुद्र के



कप्तान नेमो के आवाज़ देते ही रसोइया कमरे में आया।

अन्दर ही मेरा साम्राज्य है। लो, इसे खाओ, यह कछुए के गोश्त का पकवान है। मेरा रसोइया बहुत होशियार है। इस खाने में समुद्र की मछलियों से तैयार किया गया मक्खन और उत्तरी सागर के एक पौधे से तैयार की गई चीनी है। यह मुरब्बा भी समुद्री फलों से बना है।''

खाने के समय कप्तान ने मुझे और भी बहुत-सी बातें बताईं। उसने कहा, ''हमें समुद्र से खाना ही नहीं, कपड़े-लत्ते भी मिलते हैं। समुद्र में कई प्रकार के पौधे रेशम के तार जैसे रेशों से अपने अंग समुद्री चट्टानों से चिपकाते हैं। इन्हीं रेशों को बुनकर हम अपनी पोशाकें बनाते हैं। समुद्र में कई प्रकार के रंग भी पाए जाते हैं। आप जिस कमरे में रहेंगे उसमें इत्र की कुछ शीशियां रखी हैं। वे सभी इत्र समुद्री पौधों का अर्क निकालकर बनाए गए हैं। गद्दा भी समुद्री घास का बना है। जिस कलम से आप लिखेंगे, वह ह्वेल मछली की हड्डी से बना है। स्याही कालवरी नाम की मछली से निकाले गए नीले रंग से बनी है। इस प्रकार इस नाव की हर चीज़ समुद्र से प्राप्त की जाती है।''

भोजन समाप्त होने पर उसने कहा, ''प्रोफेसर साहब, अगर आप इस नाव की सैर करना चाहें तो मैं इस समय खाली हूं।''

मैं तुरन्त राज़ी हो गया। पहले कप्तान मुझे अपनी लाइब्रेरी में ले गया। यह एक काफ़ी बड़ा कमरा था और इसमें काली लकड़ी की अलमारियों में सुन्दर जिल्दों में बंधी हज़ारों पुस्तकें सजी थीं। कप्तान ने बताया कि उसकी लाइब्रेरी में लगभग बारह हज़ार पुस्तकें हैं। इनमें कई दुर्लभ पुस्तकें भी थीं। इतिहास, साहित्य, धर्मशास्त्र आदि अनेक विषयों की पुस्तकें थीं, लेकिन सबसे अधिक संख्या ज्ञान-विज्ञान-संबंधी पुस्तकों की थीं। राजनीति और अर्थशास्त्र की एक भी पुस्तक नहीं थी। लाइब्रेरी के पास ही एक छोटा-सा धूम्रपान का कमरा था। उसने मुझे एक सिगार पीने के लिए दिया। यह सिगार समुद्र में मिलनेवाली एक बेल की पत्तियों से बनाया हुआ था। इसके बाद कप्तान मुझे एक दूसरे कमरे में ले गया। इस कमरे को उसने संग्रहालय का नाम दे रखा था।

इसमें तरह-तरह के कीमती पत्थरों को सजाकर रखा गया था। दीवारों पर बड़े कीमती चित्र लगे थे—वे संसार के कई महान् चित्रकारों के बनाए हुए थे और प्रसिद्ध संगीतज्ञों के संगीत ग्रंथ भी रखे हुए थे। कमरे के बीच में सात गज़ की एक सीप थी, जिसमें बिजली से प्रकाशित जलधारा गिर रही थी। उसके चारों ओर शीशे के बहुमूल्य बर्तन रखे थे। एक तरफ सच्चे मोतियों का संग्रह था। कुछ मोती तो कबूतर के अंडे से भी बड़े थे। ये मोती उस मोती से भी कुछ अधिक मूल्यवान थे, जिसे एक यात्री 'टेवरनियर' ने फ़ारस के बादशाह के हाथ तीन लाख रुपये में बेचा था।

इसके बाद कप्तान नेमो ने वह कमरा दिखाया जिसमें मुझे रहना था। कमरे में एक पलंग था, हाथ-मुंह धोनेवाली मेज़ तथा लकड़ी का अन्य सामान मौजूद था। कमरा मुझे खासा आरामदेह लगा। मैंने कप्तान को धन्यवाद दिया। कप्तान ने एक दरवाज़ा खोलते हुए कहा, आपके कमरे के पास ही मेरा कमरा है। मेरे कमरे का रास्ता भी उसी कमरे में से आता है, जहां अभी हम थे। कप्तान के कमरे में लोहे का एक पलंग, एक बड़ी मेज़ और कुछ अन्य सामान था। बिजली का तेज़ बल्ब जल रहा था। इस कमरे में ज़रूरत की चीज़ों के अलावा आराम का कोई भी सामान नहीं था। दीवारों पर तरह-तरह के यंत्र लगे हुए थे। कप्तान ने मुझे एक कुर्सी पर बैठने का इशारा किया और फिर कहना शुरू किया, ''प्रोफेसर साहब, ये सभी यंत्र इस पनडुब्बी को चलाने के लिए हैं। इन यंत्रों से मुझे समुद्र में अपनी पनडुब्बी की वास्तविक स्थिति और दिशा मालूम होती रहती है। इनमें से कुछ को तो आप जानते ही होंगे और कुछ का मैंने खुद आविष्कार किया है। यह थर्मामीटर है, यह बैरोमीटर है। यह यंत्र तूफानी शीशी कहलाता है। इससे तूफान की सूचना पहले ही मिल जाती है। कम्पास से दिशा का ज्ञान होता है। 'सेक्सटेंट' अक्षांश जानने के काम आता है। क्रोमोमीटर देशान्तर बताता है। इधर वाले यंत्र से दबाव तथा पानी के नीचे की गहराई मालूम

होती है।

मैंने पूछा, "कप्तान, इन यंत्रों में से बहुतों को तो मैं जानता हूं। लेकिन एक बात मेरी समझ में नहीं आई। तुम्हारी पनडुब्बी की चाल बहुत तेज़ है। ऐसी चाल भाप से या मामूली बिजली से पैदा नहीं हो सकती। इसका रहस्य क्या है ?"

कप्तान ने उत्तर दिया, "प्रोफेसर साहब, मेरी बिजली दूसरों की बिजली से भिन्न है। बस, फिलहाल मैं इतना ही आपको बता सकता हूं।"

इसके बाद कप्तान नेमो मुझे पनडुब्बी के दूसरे हिस्से दिखाने के लिए ले गया। कुछ आगे चलने पर एक कुएं जैसा छेद मिला। इसमें ऊपर जाने के लिए लोहे की सीढ़ी भी लगी थी। कप्तान ने बताया कि यह सीढ़ी दूसरी नाव में जाने के लिए है। दूसरी नाव बहुत ही हल्की तथा इस प्रकार बनी है कि कभी डूब ही नहीं सकती। वह नाव मछली मारने या घूमने के काम आती है। कप्तान ने बताया, "वह नाव पनडुब्बी के ऊपर अपने निश्चित स्थान पर पेचों से कसी हुई है। उस नाव की भी डेक है। इस पनडुब्बी में बने सुराख के ठीक सामने उस नाव में भी इसी के बराबर सूराख है। इस सीढ़ी के द्वारा दोनों सूराख पार करके हम उस नाव में पहुंच जाते हैं। बाद में पनडुब्बी के लोग इधर के सूराख का दरवाज़ा बन्द कर लेते हैं। दूसरी नाव के सूराख का दरवाज़ा चरखी के दबाव से बन्द कर लिया जाता है। बाद में वह नाव नीचे नहीं लौटती बल्कि यह पनडुब्बी ही नाव के पास पहुंच जाती है। दोनों के बीच बिजली के एक तार से सम्बन्ध कायम रहता है।"

इसके बाद कप्तान ने मुझे पनडुब्बी का रसोईघर भी दिखाया। वहां सारा खाना बिजली से बन रहा था। एक यंत्र से भाप उड़ाकर और उसे ठंडा करके पीने का पानी तैयार किया जा रहा था।

इसके बाद कप्तान फिर मुझे अपने बड़े कमरे में ले आया। सिगार जलाकर हम आराम-कुर्सी में बैठ गए। कप्तान ने पनडुब्बी का नक्शा

खोला और मुझे समझाना शुरू किया, "प्रोफेसर साहब, आप पहले बाहरी आदमी हैं जिन्हें मैं अपनी इस पनडुब्बी का सारा भेद बता रहा हूं। पहले तो याद रखिए कि इस पनडुब्बी का नाम मैंने 'नॉटिलस' रखा है। यह देखिए इसका आकार कुछ-कुछ सिगार की तरह है। इसकी कुल लम्बाई 232 फुट और चौड़ाई 26 फुट है। यह पांच हज़ार फुट पानी जितना स्थान घेरती है और इसका वज़न 2 हज़ार टन है। जब यह समुद्र की सतह पर होती है तब भी इसका अधिकांश भाग पानी में डूबा रहता है। पूरी नाव फौलाद की दोहरी चद्दरों से बनी है। जब हम 'नॉटिलस' का वज़न बढ़ाना चाहते हैं और इसे गहराई में ले जाना चाहते हैं तो इसके नीचे बनी एक टंकी में उसी हिसाब से पानी भर लेते हैं। जब हमें ऊपर आना होता है तो पंपों से उस टंकी को खाली कर दिया जाता है।

'नॉटिलस' सीधी आगे और सीधी ऊपर-नीचे दोनों ओर चल सकती है। इसके दोनों तरफ पंखे लगे हुए हैं। 'नॉटिलस' को पानी में ठीक रास्ते पर बनाए रखने के लिए इसके चालक लोग शीशे के एक केबिन में बैठे रहते हैं। ये शीशे इतने मज़बूत हैं कि पानी के बहुत अधिक दबाव से भी ये टूट नहीं सकते। चालक के पीछे शीशे का विद्युत् रिफ्लेक्टर लगा रहता है। उस पर बिजली की रोशनी पड़ती है, जो उलटकर आगे आधे मील तक समुद्र तल पर फैल जाती है।"

मैंने पूछा, "लेकिन कप्तान, यह तो बताओ कि इस विचित्र पनडुब्बी को तुमने गुप्त रूप से बनाया कैसे ?"

वह बोला, "प्रोफेसर साहब, इसकी भी एक कहानी है। मैंने इसके भाग अलग-अलग देशों में बनवाए और उन्हें अलग-अलग पतों पर मंगवाया। इसकी पतवार और बाहरी चरखी लंदन में बनीं। आवरण पर लोहे की चादर लीवरपूल में बनी। टंकियां पेरिस में बनीं। इंजिन जर्मनी की एक कम्पनी ने बनाए। इन सबको मैंने भिन्न-भिन्न नामों से बनाने का आर्डर दिया। इसके बाद मैंने समुद्र के एक एकांत द्वीप

में कारखाना बनाया। वहां मेरे बहादुर साथियों ने मेरी देखरेख में उन सब भागों को जोड़कर यह विचित्र पनडुब्बी तैयार कर दी। जब यह पनडुब्बी तैयार हो गई तो इसे समुद्र में डालकर हमने उस द्वीप को आग लगाकर नष्ट कर दिया ताकि हमारा कोई निशान बाकी नहीं रहे।''

''इसमें बहुत अधिक रुपया खर्च हुआ होगा ?''

''हां प्रोफेसर साहब ! इसमें कुल मिलाकर 20 लाख पौण्ड खर्च हुए थे।''

''अच्छा कप्तान, मुझे एक बात और बताओ। लगता है, तुम बहुत अमीर हो !''

वह बोला, 'हां, मैं इतना अमीर हूं कि ब्रिटेन की सरकार का सारा राष्ट्रीय ऋण, जो कई अरब रुपये का होगा, तुरन्त अदा कर सकता हूं।''

मैं उस विचित्र व्यक्ति को ध्यान से देखने लगा। मैं सोच रहा था कि कहीं मेरी सीधाई का लाभ उठाकर लंबी-चौड़ी बातें तो नहीं हांक रहा है। लेकिन उसकी बताई बहुत-सी बातें तो मैं अपनी आंखों से देख रहा था। इतने में कप्तान नेमो ने कहा, ''प्रोफेसर, अब आप ज़रा यात्रा के लिए तैयार हो जाइए। लगभग बारह बजने वाले हैं। आइए, ज़रा हम समुद्र की सतह पर घूम आएं।'' यह कहकर उसने तीन बार बिजली की घंटी बजाई। पंपों से पानी टंकियों से बाहर निकलने लगा। मोनोमीटर की सूई भिन्न-भिन्न दबाव प्रकट करने लगी। 'नॉटिलस' ऊपर जाती मालूम हुई और थोड़ी देर बाद रुक गई। हम लोग जाने-पहचाने मार्ग से 'नॉटिलस' के चबूतरे पर जा पहुंचे और लोहे की सीढ़ियों को पार करके उसकी छत पर पहुंच गए। उसका चबूतरा पानी से केवल तीन फुट ऊपर था। मैंने देखा कि लोहे की चद्दरें एक के ऊपर दूसरी थोड़ा चढ़ाव देकर लगाई गई थीं। चबूतरे के बीच आधी डूबी हुई एक नाव पड़ी हुई थी। कभी-कभी शीशे के दो केबिन पानी के ऊपर दिखाई दे जाते थे। एक में 'नॉटिलस' के चलानेवाले बैठे थे और दूसरे में रोशनी के तेज़ बल्ब लगे हुए थे।

समुद्र इस समय बहुत शांत था और आकाश भी साफ था। चारों ओर पानी ही पानी था। थोड़ी देर ऊपर रहकर हम लोग फिर नीचे लौट आए। रास्ते में कप्तान ने मुझे बताया, ''हम लोग इस समय जापान के तट से 300 मील दूर हैं। आज 8 नवम्बर की दोपहर से हम लोगों की यात्रा शुरू हो रही है। ''प्रोफेसर, अब आप अपने कमरे में आराम कीजिए। आप चाहें तो लाइब्रेरी में अध्ययन कर सकते हैं। मैं अपना काम करने जा रहा हूं। हम लोग इस समय समुद्र की सतह से 50 गज़ नीचे पूर्व-उत्तर दिशा की ओर जा रहे हैं। समुद्र का नक्शा भी लाइब्रेरी में मौजूद है। अच्छा, अब मैं विदा चाहता हूं।''

कप्तान मुझे नमस्कार करके चला गया। मैं कुछ देर तक अपने कमरे में लेटा रहा। लेकिन वहां मेरा मन नहीं लगा और मैं लाइब्रेरी में जाकर समुद्र का नक्शा देखने लगा।

समुद्र में भी महाद्वीपों की भांति बड़ी-बड़ी नदियां होती हैं। ये समुद्री धाराएं कहलाती हैं और अपने तापमान या रंग के कारण दूसरी से भिन्न होती हैं। इनमें सबसे प्रसिद्ध 'गल्फ स्ट्रीम' है। अब तक पांच विशेष धाराओं का पता लग चुका था, कप्तान ने अपनी नई यात्रा का जो प्रभाव-स्थान बताया था, वह कुरोशिया या जापानी काली नदी के नाम की धारा में स्थित था। 'नॉटिलस' इसी धारा में आगे बढ़ रही थी। थोड़ी देर में नेडलैण्ड और कन्सील भी वहां आ पहुंचे। दोनों ने मेरी और कप्तान की बातचीत के सम्बन्ध में मुझसे सैकड़ों प्रश्न कर डाले—वह कौन है ? कहां से आया है ? कहां जाना चाहता है तथा हम लोगों को कहां ले जाना चाहता है ? इत्यादि-इत्यादि।

मैंने कहा, ''नेडलैण्ड, जितना तुम जानते हो, उससे अधिक मैं भी नहीं जानता। इस समय 'नॉटिलस' पर हमला करके इस पर कब्ज़ा करने या यहां से भाग निकलने का ध्यान छोड़ दो। यह अद्‌भुत पनडुब्बी वैज्ञानिक जानकारी और इंजीनियरी का एक बेजोड़ नमूना है। और इसमें बड़ी कीमती वस्तुएं रखी हुई हैं। हमें चाहिए कि हम लोग शांत होकर

जो कुछ होता जाए, देखते रहें।''

एकाएक रोशनी बुझ गई। कमरे में अंधेरा छा गया। हम चुपचाप यह सोचने लगे कि देखें, अब क्या होता है। हमें किसी चीज़ के खिसकने की आवाज़ सुनाई दी। थोड़ी देर बाद कमरे के दोनों तरफ दो लम्बी खिड़कियों के बाहर उजाला दिखाई पड़ा, जिससे आसपास का समुद्री जल प्रकाशित हो रहा था। 'नॉटिलस' के चारों ओर समुद्र एक मील तक साफ दिखाई दे रहा था। 'नॉटिलस' के चारों ओर समुद्र एक मील तक साफ दिखाई दे रहा था। संसार का कौन-सा चित्रकार समुद्र की इस निर्मलता और सौंदर्य का चित्रण कर सकता था ! यह दृश्य इतना सुन्दर था कि शब्दों में इसका वर्णन करना असंभव है। एकाएक मछलियों की फौज ने 'नॉटिलस' को घेर लिया। हम उन तरह-तरह की मछलियों को देख रहे थे जो रंग, रूप और आकर में एक-दूसरे से बढ़-चढ़कर थीं। इनमें से कई मछलियां ऐसी थीं, जिन्हें आज तक हममें से किसी ने पहले नहीं देखा था। थोड़ी देर बाद कमरे में फिर से रोशनी हो गई और खिड़कियों के लोहे के पल्ले बन्द हो गए। लेकिन काफी समय तक वह दृश्य मेरी आंखों के सामने नाचता रहा। दीवार पर लगे यंत्रों ने बताया कि 'नॉटिलस' इस समय पंद्रह मील प्रतिघंटा की चाल से चल रही है और केवल 100 फैदम की गहराई पर है। घड़ी ने पांच का घंटा बजाया। कप्तान नेमो वापस वहां नहीं आया। नेडलैण्ड और कन्सील भी अपने-अपने कमरों में चले गए। कुछ देर बाद मैं भी अपने कमरे में लौट आया और आराम करने लगा।

मैं दूसरे दिन 9 नवम्बर को काफी देर से जगा। कन्सील रोज़ की तरह आया और कुशल-समाचार पूछकर चला गया। कप्तान नेमो की मैं कल से प्रतीक्षा कर रहा था। लेकिन वह नहीं आया। मैं दिन-भर लाइब्रेरी में जाकर तरह-तरह की पुस्तकें पढ़ता रहा। आज वे खिड़कियां भी नहीं खुलीं। दूसरा दिन मैंने कन्सील और नेड के साथ बिताया। कप्तान आज भी नहीं आया। हम लोगों ने खूब डटकर खाना खाया

और फिर गप्पें हांकते रहे। बाद में मैंने आज तक की यात्रा का वर्णन समुद्री घास से बने कागज़ पर लिख डाला।

11 नवम्बर को सुबह 'नॉटिलस' ताज़ी हवा से भर उठी। मुझे लगा कि इस समय वह समुद्र की सतह पर आ गई है। मैं दौड़ता हुआ चबूतरे पर पहुंच गया। इस समय सुबह के 6 बजे थे। कुछ देर बाद मैं वापस नीचे लौट आया।

इस तरह पांच दिन बीत गए। 16 नवम्बर को जब मैं नेड और कन्सील के साथ अपने कमरे में आया तो मेज़ पर मुझे एक पत्र मिला, जिसमें लिखा था—''कप्तान नेमो प्रोफेसर ऐरोनेक्स को कल सुबह क्रेस्पो द्वीप के जंगल में शिकार के लिए आमन्त्रित करते हैं। आशा है, प्रोफेसर को सम्मिलित होने में कोई कठिनाई नहीं होगी। यदि वे अपने साथियों के साथ आएं तो कप्तान को और भी खुशी होगी।'' नीचे हस्ताक्षर थे—'नॉटिलस का कमांडर--कप्तान नेमो।'

दूसरे दिन सुबह जब मैं जगा तो मैंने देखा कि 'नॉटिलस' पानी में अपनी जगह शांत खड़ी थी। मैं तुरन्त अपनी पोशाक पहनकर कप्तान के कमरे में पहुंचा। कप्तान वहां बैठा मेरा इंतज़ार कर रहा था। उसने नमस्कार करके मुझसे पूछा, ''क्या आप मेरे साथ शिकार पर चलने के लिए तैयार हैं ?''

मैंने कहा, ''हां, कप्तान, हम लोग तैयार हैं। लेकिन यह तो बताओ कि क्रेस्पो द्वीप के जंगल किस तरह के हैं !''

उसने कहा, ''वे ज़मीन के जंगल नहीं, समुद्री जंगल हैं और वहां हम लोग पैदल, लेकिन पानी के अन्दर-अन्दर ही जाएंगे।''

''और हम शिकार कैसे करेंगे ?''

वह बोला, ''बंदूक से ! आपने गोताखोरों की पोशाक तो देखी ही होगी ? हम भी लगभग वैसी ही पहनते हैं। लेकिन वह ज़्यादा चुस्त होती है। इसके अलावा मैंने सांस लेने के यंत्र में भी थोड़ा सुधार किया है। मेरे गोताखोर नाक और आंखों पर एक विशेष प्रकार की नकाब

पहनते हैं, और उनकी पीठ पर हवा से भरी टंकी होती है। जब हमें अधिक गहराई पर जाना होता है तो हम तांबे की टोपी सिर पर पहनते हैं और उसमें दो नलियां लगा लेते हैं। इन टंकियों में हवा को दबाकर जमा किया जाता है और वह नौ-दस घंटों तक सांस लेने के लिए काफी होती है।''

नेडलैण्ड शिकार में हमारे साथ जाने के लिए राज़ी नहीं हुआ। हम लोग चार आदमी थे। मैं, कन्सील, कप्तान नेमो और उसका एक आदमी। हम लोग पानी में जाने के लिए अपनी पोशाकें पहनने के लिए इंजिन वाले कमरे के पास की एक कोठरी में गए। यह कोठरी 'नॉटिलस' का शस्त्रागार तथा पोशाकघर थी। गोताखोरी की पोशाकें तथा अन्य कई यंत्र दीवार पर टंगे हुए थे।

खलासियों की सहायता से मैंने पोशाक पहनी। यह रबर की बनी थी और बहुत मुलायम तथा साथ ही मज़बूत भी थी। इसमें बहुत चुस्त पायजामा और कोट था तथा जूते और दस्ताने भी रबर के थे। जूते के तले बहुत वज़नी थे। कोट में पीतल की एक पेटी जैसी लगी थी, जूते के तले बहुत वज़नी थे। कोट में पीतल की एक पेटी जैसी लगी थी, जो पानी के दबाव से सीने की रक्षा भी करती थी। इसके बाद हममें से प्रत्येक को बिजली का एक लैम्प और विशेष प्रकार की बंदूकें दी गईं। इस लैम्प के बल्ब में एक प्रकार की कार्बनिक गैस भरी थी, जो बिजली की गर्मी के प्रभाव से बहुत तेज़ रोशनी देती थी। बंदूकें दबाई हुई हवा के ज़ोर से चलती थीं। इनकी गोलियां साधारण गोलियों की तरह नहीं थीं। ये शीशे की छोटी-छोटी बोतलें थीं। इनमें बिजली भरी हुई थी। ज़रा-से दबाव से गोली चल सकती थी। ये गोलियां इतनी भयानक थीं कि अगर बड़े-से-बड़े जीव को लग जातीं तो वह अवश्य मर जाता। कप्तान नेमो ने मुझे बंदूक चलाने का तरीका बताया और इसके बाद हमने अपनी-अपनी टोपियां पहन लीं। कोट का कालर तांबे का बना था। टोपी और कालर एक-दूसरे से पेच द्वारा कस दिए गए।



धुँधली-सी रोशनी हुई और हम समुद्र में आ गए।

मेरी गर्दन के पास हवा से भरी लोहे की टंगी लगी थी। जब टोपी की नली हवा की टंकी से जुड़ गई तो मैं सांस लेने लगा।

इसके बाद हमें एक छोटे-से केबिन में बन्द कर दिया गया और हमारे चारों ओर अंधेरा छा गया। थोड़ी ही देर बाद एक तेज़ सीटी सुनाई पड़ी। केबिन में नलों से पानी भरने लगा। जब इस केबिन में पानी हमारे सिर से भी ऊपर तक भर गया तो दूसरी ओर का दरवाज़ा खुला। धुंधली-सी रोशनी हुई और हम तैरते हुए समुद्र के पानी में आ गए। थोड़ी ही देर में हम लोग पानी में नीचे उतरते हुए समुद्र की तलहटी में पहुंच गए।

समुद्र तलहटी का दृश्य बड़ा सुन्दर था। शब्दों में उसका वर्णन असंभव है। रोशनी से समुद्र की सतह के 30 फुट नीचे की ज़मीन काफी प्रकाशमान थी। 120 गज़ दूर तक की वस्तुएं साफ-साफ दिखाई पड़ रही थीं। चारों ओर का पानी हवा जैसा लग रहा था। अन्तर केवल इतना था कि वह हवा से कुछ अधिक बना था। हम लोग चमकदार बालू पर चल रहे थे। पानी के अन्दर कपड़ों, जूतों, टोपी और हवा से भरी टंकियों का भार मालूम नहीं होता था। हमारे ऊपर 'नॉटिलस' धीरे-धीरे दूर होती गई और फिर गायब हो गई। थोड़ी देर बाद हम लोग एक सुन्दर-सी चट्टान के पास पहुंचे। इस पर तरह-तरह के जीव लिपटे हुए थे, जिनमें से कोई सितारों के आकार का था और कोई पौधे के आकार का। कुछ आगे बढ़ने पर हमें समुद्री पेड़-पौधे दिखाई देने लगे। इन पर काले, नीले और भूरे रंग के फूल खिले हुए थे। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते गए, सूरज की किरणों का प्रकाश कम होता गया। हमारे पैरों की आहट यहां ज़मीन की अपेक्षा अधिक तीव्र सुनाई देती थी। इसका कारण यह था कि पानी हवा से चार गुना अधिक अच्छा ध्वनिचालक होता है। ज़रा-सी आवाज भी उसमें काफी दूर तक सुनाई देती है। अब हम लगभग 300 फुट की गहराई में पहुंच चुके थे। फिर भी वहां नीचे इतना प्रकाश था कि अभी लैम्प जलाने की आवश्यकता



नहीं थी। कुछ आगे बढ़ने पर कप्तान नेमो ने रुककर उंगली से थोड़ी दूर पर एक काली-सी वस्तु की ओर इशारा किया। यही क्रेस्पो द्वीप के समुद्री जंगल थे।

जंगल के पास पहुँचने पर मैंने देखा कि उसमें अधिकतर झाड़ी जैसे ही पौधे थे। सभी पेड़-पौधे लोहे की छड़ी जैसे थे और उनकी टहनियां सीधी-तिरछी सभी प्रकार की थीं। जब मैं किसी पौधे को तिरछा झुका देता था तो वह थोड़ी देर में फिर असली हालत में आ जाता था। इसमें पत्तियां बहुत कम थीं। टहनियाँ कई रंग की थीं; जैसे काली, लाल, भूरी, गुलाबी और नीली।

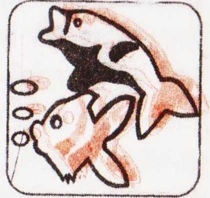
अब तक हम लोग काफी थक गए थे। हमें समुद्र की तलहटी में

घूमते हुए लगभग चार घंटे हो गए थे। कप्तान के इशारे पर हम लोग वहां बैठकर आराम करने लगे। मैं एक चट्टान पर सिर टिकाकर लेट गया। थोड़ी देर में मुझे नींद आ गई।

जब मैं जगा तो मुझे लगा कि सूर्य पानी के ऊपर क्षितिज के पास डूबने जा रहा है। नीचे तलहटी में काफी अंधेरा हो गया था। कप्तान भी उठकर चलने की तैयारी कर रहा था। इतनी देर में मैंने देखा कि एक भयानक समुद्री मकड़ा तिरछी आंखों से घूरते हुए मेरी ओर झपटा आ रहा है। यह मकड़ा तीन फुट से भी अधिक चौड़ा था। अचानक कप्तान ने आगे बढ़कर मकड़े को अपनी बंदूक के कुंदे से मार डाला। कुछ आगे चलकर हम लोग एक गहरी घाटी में पहुंचे। अंधेरा अधिक होने के कारण कप्तान ने अपना लैम्प जला दिया। हमने भी उसकी देखा-देखी अपने-अपने लैम्प जला लिए। लैम्पों की रोशनी में 75 फुट तक चारों ओर की चीज़ें चमकने लगीं। कप्तान अब भी अंधेरी गहराई में जंगल के अन्दर घुसता चला जा रहा था। वृक्ष धीरे-धीरे कम पड़ने लगे और जानवर अधिक संख्या में मिलने लगे। कुछ आगे चलने पर एक चट्टान की दीवार हम लोगों के सामने आ गई। दीवार इतनी ऊंची थी कि उसको पार करना कठिन था। यह क्रेस्पो द्वीप था। वहां से हम लोग वापस लौट गए। लौटते समय कप्तान दूसरे रास्ते से चलने लगा। इस रास्ते पर चढ़ाई अधिक थी। हमें विभिन्न प्रकार की मछलियां दिखाई देने लगीं। एक जगह कप्तान ने निशाना साधकर अपनी बंदूक चलाई। एक जीव हम लोगों से कुछ ही कदम दूर गिरता दिखाई पड़ा। यह एक समुद्री गैंडा था, जो केवल समुद्र में ही जीवित रह सकता है। कप्तान के साथी ने उसको अपने कंधे पर लाद लिया।

अन्त में हमारे शिकार का कार्यक्रम समाप्त हुआ और हम लोग 'नॉटिलस' पर पहुंच गए। बाहर का दरवाज़ा अब भी खुला हुआ था। हम लोग उसी केबिन में घुस गए। कप्तान ने बाहरी दरवाज़ा बन्द कर लिया और एक बटन दबाया। पानी पम्पों से बाहर निकलने लगा। थोड़ी

देर में केबिन बिलकुल खाली हो गया। अन्दर का दरवाज़ा खुला और हम लोग उसी पोशाक वाले कमरे में दाखिल हुए। हमने गोताखोरी की पोशाकें उतारीं और सीधे अपने-अपने कमरों में वापस आ गए।



5

दूसरे दिन जब मैं सोकर उठा तो सारी थकावट दूर हो गई थी, लेकिन क्रेस्पो द्वीप की उस अनोखी यात्रा की याद अब भी ताज़ी थी। समुद्र की तलहटी में देखे गए विचित्र दृश्य अब भी मेरी आंखों के सामने तैर रहे थे। उस समय पनडुब्बी सतह पर निकल आई थी। मैं भी खलासियों के साथ चबूतरे पर पहुंचकर आसपास का दृश्य देखने लगा। रात में मछली पकड़ने के लिए बिछाए गए जाल खींचे जा रहे थे और मछलियों को भंडारघर में पहुंचाया जा रहा था। कुछ खलासी 'नॉटिलस' की हवा को बदलने के लिए यंत्रों को ठीक कर रहे थे। जब सब लोग नीचे वापस लौटने लगे तो मैं भी कप्तान के पीछे-पीछे सीधा अपने कमरे में जा पहुंचा। कप्तान से बात करने पर मालूम हुआ कि 'नॉटिलस' इस समय भी उत्तर-पूर्व दिशा में जा रही है। कप्तान पनडुब्बी को किसी भी देश के पास नहीं ले जाना चाहता था। कुछ देर तक कप्तान के साथ बात करने के बाद मैं लाइब्रेरी वाले कमरे में लौट आया। नेड और कन्सील भी मेरे पास आकर किताबों के चित्र देखने लगे। कभी-कभी हम लोग खिड़कियों के पास खड़े होकर पानी के अन्दर का दृश्य देखने लगते थे।

एक बार हमने एक डूबते हुए जहाज़ को भी देखा। 'नॉटिलस' ने एक बार उस जहाज़ की परिक्रमा की और फिर वह अपने रास्ते पर

आगे बढ़ गई। इस समय हम ऐसे रास्ते से जा रहे थे जहां से संसार के जहाज़ अक्सर गुज़रा करते थे। इसी कारण समुद्र की तलहटी पर हमें अक्सर टूटे-फूटे जहाज़ों से टुकड़े, लंगर, ज़ंजीरें, तोपें आदि दिखाई दे जाती थीं। 11 दिसम्बर को हमें 'पोमोटाऊ' का द्वीपसमूह दिखाई दिया। यहां के सभी द्वीप मूंगे से बने हुए हैं। मूंगे बनानेवाले कीड़े लगातार अपने काम में लगे रहते और चूने जैसी कड़ी चीज़ की परतों पर परतें बनाते जाते हैं। धीरे-धीरे ये परतें ऊपर उठ जाती हैं और अन्त में द्वीप का रूप ले लेती हैं। जब 'नॉटिलस' इन द्वीपों के पास से गुज़रती थी तो उसकी बिजली के प्रकाश से ये दीवारें चमकने लगती थीं।

एक दिन मैंने कप्तान को खाली देखकर उससे पूछा, "कप्तान, समुद्र की तलहटी में डूबे हुए जहाज़ों के इन भग्नावशेषों से तुम अपने काम की चीज़ें क्यों नहीं बटोर लेते ?"

उसने कहा, "ये टूटी-फूटी ज़ंग लगी हुई चीजें मेरे किस काम की ! हां, कभी जब मुझे सदियों पुराना कोई जहाज़ का ढांचा दिखाई दे जाता है तो मैं अपनी इतिहास-सम्बन्धी जानकारी बढ़ाने के लिए उसे देखने के लिए अवश्य जाता हूं और जब कोई अनोखी चीज़ मुझे मिल जाती है तो यादगार के रूप में उसे ले आता हूं। देखिए, मैं आपको एक चीज़ दिखाता हूं।" यह कहकर उसने अलमारी से निकालकर लोहे का एक पुराना डिब्बा मेरे सामने रख दिया। उसमें फ्रांस की मोहर लगी हुई थी। डिब्बे के अन्दर पीले-पीले कुछ कागज़ रखे थे, जो अब भी पढ़े जा सकते थे। एक कागज़ के किनारे पर फ्रांस के सम्राट लुई 16वें के हस्ताक्षर थे।

हम लोग इस तरह बातें कर ही रहे थे कि अचानक एक धक्का-सा मालूम हुआ और 'नॉटिलस' चलते-चलते रुक गई। खलासियों ने कप्तान को खबर दी कि पनडुब्बी चूने की एक चट्टान से टकरा गई है और उसी में फंस गई है। मैं इस खबर से बहुत घबराया। सब लोग खिड़कियों के पास जाकर चट्टान को देखने लगे। हमारे ऊपर बहुत थोड़ा पानी

था। शायद नॉटिलस समुद्र की सतह के समीप ही चल रही थी। उसे चट्टान में से निकालने की बहुत कोशिश की गई, लेकिन वह टस से मस नहीं हुई। इसके बाद एक और मुसीबत आ खड़ी हुई। असल में हमारे साथ यह दुर्घटना एक छोटी खाड़ी में हुई थी। देखते-देखते खाड़ी के पानी की सतह कम हो गई और चट्टान में फंसी हुई 'नॉटिलस' का काफी बड़ा भाग पानी के ऊपर निकल आया। खाड़ी में ज्वार के कारण जो पानी भर आया था, वह भाटे से उतर गया था। अब तो हमें अगले ज्वार की प्रतीक्षा में कुछ दिनों तक वहां रुकना था। कप्तान ने हिसाब लगाकर बताया कि पांच दिन में पूरा चन्द्रमा निकलेगा। उस दिन काफी पानी ज्वार में उठेगा और तभी 'नॉटिलस' को आगे बढ़ने का मौका मिलेगा। तब तक इसके आसपास की चट्टान को भी तोड़कर अलग किया जा सकेगा।

नेडलैण्ड के कहने पर मैंने कप्तान से इजाज़त मांगी कि जब तक 'नॉटिलस' यहां रुकने के लिए मजबूर है, तब तक हम पास के द्वीप की सैर कर आएं। मुझे उम्मीद तो नहीं थी कि कप्तान इजाज़त देने के लिए राज़ी होगा, लेकिन पता नहीं क्यों उसने हमारा कोई विरोध नहीं किया। बाद में हमें पता चला कि चारों ओर अथाह समुद्र से घिरे हुए उस जंगली द्वीप पर जाने की इजाज़त कप्तान ने यही सोचकर दी थी कि अगर हम यहां से भागना भी चाहेंगे तो भाग नहीं सकेंगे। दूसरे दिन हम तीनों—मैं, कन्सील और नेड नाव लेकर पास के द्वीप की ओर चल पड़े। नेडलैण्ड बहुत खुश था। उसने शिकार के लिए कुछ हथियार भी साथ में ले लिए थे। मैं भी इतने दिनों बाद धरती पर पहुंचने की आशा से मन ही मन बहुत प्रसन्न था।

उस द्वीप में पहुंचकर हमने सबसे पहले खूब नारियल तोड़े और उनका पानी पिया। इसके बाद कुछ नारियल हमने अपनी नाव में लाकर जमा कर लिए। इस द्वीप में फलों के बहुत कम पेड़ थे। फिर भी हमने सारे फल बटोर लिए। इसके बाद हम शिकार के लिए निकले। कन्सील

ने कुछ चिड़ियों का शिकार किया। शाम तक इधर-उधर घूमते रहने के बाद हम वापस अपनी नाव में बैठकर 'नॉटिलस' में लौट आए। हमें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उस समय 'नॉटिलस' में एक भी खलासी नहीं था। सब लोग गोताखोरी के कपड़े पहनकर कप्तान के साथ नीचे 'नॉटिलस' के पेंदे के पास काम कर रहे थे और उसे चट्टान से निकालने की कोशिश कर रहे थे।

दूसरे दिन फिर हम उस द्वीप में घूमने गए। जब तक 'नॉटिलस' वहां खड़ी रही, हमने अपना यह रोज़ का कार्यक्रम बना लिया था। दो-तीन दिन में ही हमने नारियल और कुछ अन्य फलों का ढेर लगा दिया। हमने कुछ चिड़ियां, सूअर और चार-पांच छोटे कंगारू मारकर 'नॉटिलस' में जमा कर दिए।

एक दिन शाम को जब हम लोग 'नॉटिलस' की ओर वापस लौट रहे थे तो न मालूम कहां से बहुत-से जंगली आदमी किनारे पर इकट्ठे हो गए। इसके पहले हमने कभी भी उन्हें वहां नहीं देखा था। उन्होंने हम पर पत्थर फेंकने शुरू किए। कुछ लोग लकड़ी के सूखे कुंदों से बनी छोटी नावों में बैठकर हमारा पीछा करने लगे। हमने किसी तरह 'नॉटिलस' में पहुंचकर अपनी जान बचाई।

मुझे इस बात की उम्मीद थी कि 'नॉटिलस' के खलासियों ने हम लोगों को भागते हुए देख लिया होगा और वे हमारी सहायता करेंगे। लेकिन मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उनमें से किसी को हमारी चिंता नहीं थी। यहां तक कि जंगली आदमियों के पास आ जाने पर भी किसी ने उनको रोकने की कोशिश नहीं की। मैं सीधा कप्तान के कमरे में चला गया। कप्तान वहां बैठा प्यानों बजा रहा था। उसने मेरी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। जब मैंने उसे पकड़ा तब भी वह काफी देर तक अपने ध्यान में ही मग्न रहा। फिर प्यानो पर एक गत पूरी करके उसने मेरी ओर देखा और पूछा, "कहिए, प्रोफेसर साहब ! शिकार कैसा रहा ? बाग-बगीचों में घूमने का कुछ आनन्द आया ?"



'नॉटिलस' चूने की चट्टान से टकरा गई।

मैंने घबराते हुए कहा, "कप्तान, कुछ भयानक जंगली आदमी हमारा पीछा करते हुए 'नॉटिलस' तक आ गए हैं। उन्होंने शायद पनडुब्बी को घेर लिया है। कहीं वे लोग अन्दर न घुस आएं।"

कप्तान ने खिलखिलाकर उत्तर दिया, 'तो प्रोफेसर, इसमें इतना घबराने की क्या बात है ? आप निश्चिंत रहिए। अगर इस द्वीप के सारे निवासी इकट्ठे हो जाएं, तब भी 'नॉटिलस' को उनके हमले का कोई डर नहीं है।" यह कहकर वह फिर से प्यानो के परदों पर उंगलियां चलाने लगा। मैं कप्तान के कमरे से निकलकर बाहर खलासियों के पास आ गया। वे लोग शीशे की खिड़कियों में से जंगलियों को देख रहे थे। जंगली लोग अपनी नाव लेकर 'नॉटिलस' के आसपास इकट्ठे हो गए थे और उस पर पत्थर और तीरों की वर्षा कर रहे थे। खलासी लोग खिड़कियों में खड़े उनका मज़ाक उड़ा रहे थे। खलासियों से ही मुझे मालूम हुआ कि पनडुब्बी को चट्टान में से निकाल लिया गया है और अब ज्वार की प्रतीक्षा की जा रही है ताकि खाड़ी में पानी की सतह ऊंची हो तो वह खाड़ी से बाहर निकल सके।

इतने में मैंने देखा कि एक खलासी ने शीशे की खिड़की भी खोल दी और वह उसमें से गर्दन निकालकर जंगलियों को चिढ़ाने लगा। तभी सनसनाता एक पत्थर खिड़की में होकर अन्दर आ गया। वह खलासी अपना सिर बचाकर पीछे हट गया और उसके साथी खिलखिलाकर हंस पड़े।

इतने में जंगलियों में से एक आदमी ने, जो शायद उनका नेता था, खिड़की के अन्दर घुसने की कोशिश की। अभी उसने खिड़की पर हाथ रखा ही था कि पता नहीं कैसे उसे बड़े ज़ोर का धक्का लगा और वह चीखता हुआ पानी में जा गिरा।

अब मुझे इसका भेद समझ में आया। असल में खिड़की की चौखट में बिजली की धारा प्रवाहित कर दी गई थी, इसलिए कोई भी आदमी उसमें घुस नहीं सकता था। मैं यह सोचकर कप्तान की बुद्धि की दाद देने लगा कि उसने 'नॉटिलस' की रक्षा का कितना पक्का इन्तज़ाम कर

रखा है। थोड़ी देर के खेल के बाद खलासियों ने खिड़की बन्द कर दी। जंगली लोग काफी देर तक 'नॉटिलस' पर पत्थरों की वर्षा करते रहे और उसके बाद निराश होकर वापस लौट गए।

दूसरे दिन ज्वार का पानी खाड़ी में भर गया और तब 'नॉटिलस' आसानी से खाड़ी के बाहर निकल आई। अब हम लोग सीधे पश्चिम की ओर बढ़ रहे थे।

कुछ दिनों बाद 'नॉटिलस' ने हिन्द महासागर में प्रवेश किया। इस बीच कोई विशेष घटना नहीं घटी। मैं अपना अधिकांश समय लाइब्रेरी में ही बिताता था और जब 'नॉटिलस' गहरे समुद्र में होती थी और उसकी खिड़कियां खोल दी जाती थीं तो मैं पानी के अन्दर के दृश्य देखता रहता था।

इसी बीच अचानक एक दिन कप्तान नेमो मेरे कमरे में आया और नमस्कार करके मुझसे बोला, "प्रोफेसर साहब, क्या आप कुछ डाक्टरी जानते हैं ?"

मैंने देखा, कप्तान कुछ घबराया हुआ था। उसकी आंखें कुछ सूजी हुई थीं और ऐसा लगता था जैसे वह कई रात से सोया नहीं है। मैंने कहा, "कप्तान, मैं डाक्टर और सर्जन भी हूं। लेकिन वर्षों से मैं डॉक्टरी का काम छोड़ चुका हूं। फिर भी बताओ, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं ? आप कुछ परेशान नज़र आते हैं।"

कप्तान ने खड़े होते हुए कहा, "तो ज़रा चलिए, एक मरीज़ को देख लीजिए।" यह कहकर वह कमरे से बाहर हो गया।

मैं भी उसके पीछे-पीछे खलासियों के कमरों के पास एक कोठरी में गया। वहां झूले के बिस्तर में एक खलासी लेटा हुआ था। वह बीमार ही नहीं, घायल भी मालूम होता था। मैंने पास जाकर देखा, उसके सिर पर बड़ी गहरी चोट लगी थी। उसकी पट्टियां खून से तर थीं। मैंने हाथ लगाकर देखा, उसकी नाड़ी बहुत धीमी चल रही थी और हाथ-पैर ठंडे हो चुके थे। मैंने उसकी मरहम-पट्टी कर दी। लेकिन मुझे उस आदमी

के बचने की कोई उम्मीद नज़र नहीं आई। मैंने कोठरी के बाहर आकर कप्तान को बता दिया कि यह आदमी अब कुछ ही घंटों का मेहमान है। कप्तान थोड़ी देर तक मेरे मुंह की ओर देखता रहा और फिर उसने अपनी नज़रें नीची कर लीं। मैं वहां से अपने कमरे में चला आया।

दूसरे दिन सुबह कप्तान मेरे कमरे में आया। उसकी आंखों में आंसू थे। वह बोला, ''प्रोफेसर साहब, वह आदमी रात में मर गया। हमने उसे बचाने की बड़ी कोशिश की। वह कुछ दिन हुए इंजिन की सफाई कर रहा था तो असावधानी के कारण इसके सिर में गहरी चोट आ गई थी। अब हम लोग उसे दफनाने के लिए ले जा रहे हैं। आप चाहें तो अपने साथियों-सहित हमारे साथ चल सकते हैं।''

साढ़े आठ बजे हम सब लोग उस कमरे में जमा हो गए जहां गोताखोरी की पोशाकें रखी रहती थीं। सबने अपनी-अपनी पोशाकें पहनीं। फिर हम लोग, जिस तरह उस दिन पानी में शिकार के लिए गए थे, उसी तरह पानी में निकल आए। हमारे पीछे-पीछे चार खलासी एक बड़ा-सा ताबूत उठाए हुए पानी में उतरे। शीघ्र ही हम लोग पन्द्रह फैदम नीचे तलहटी पर पहुंच गए। यह स्थान प्रशान्त महासागर वाली तलहटी से भिन्न था। यहां चमकदार बालू नहीं थी और न समुद्री झाड़ियां और जंगल ही थे। चारों ओर मूंगे की चट्टानें और मोतियों की सीपें बिखरी हुई थीं। बहुत-से छोटे-बड़े मोती भी चारों ओर बिखरे पड़े थे। मुझे चारों ओर का दृश्य बड़ा सुहावना लगा। कन्सील और नेडलैण्ड भी अचरज के साथ चारों तरफ का दृश्य देख रहे थे। बाकी सब लोग गंभीर होकर कप्तान के पीछे-पीछे चले जा रहे थे। एक जगह कप्तान ने हाथ उठाकर रुकने का इशारा किया। सब लोग घेरा बांधकर खड़े हो गए। दो खलासियों ने आगे बढ़कर मोतियों और दूसरे चमकीले पत्थर को हटाकर एक गड्ढा तैयार किया। इसके बाद ताबूत को खोलकर उसमें से मृतक व्यक्ति के शरीर को निकालकर उस गड्ढे में रखा गया। इसके बाद हम लोग वापस 'नॉटिलस' में लौट आए।



6

एक दिन शाम को जब हम 'नॉटिलस' के चबूतरे पर खड़े होकर आसपास के समुद्र का दृश्य देख रहे थे तो कप्तान भी वहां आ पहुंचा। उसने हाथ के इशारे से बताते हुए कहा, ''प्रोफेसर साहब, वह सामने भारतीय प्रायद्वीप के दक्षिण में लंका द्वीप के जंगल दिखाई दे रहे हैं।''

मैंने आश्चर्य से कहा, ''तो कप्तान, हम लोग लंका के पास आ पहुंचे हैं !''

वह बोला, ''हां, इसके आसपास के समुद्र में, खासतौर से भारत के दक्षिण में मनार की खाड़ी में मोती बहुत मिलते हैं। क्या आप समुद्र से मोती निकालने का काम देखना चाहेंगे ?''

''हां, कप्तान, ज़रूर।''

''तो हम 'नॉटिलस' को मनार की खाड़ी की ओर ही ले जा रहे हैं। असल में साल में एक बार मैं इधर ज़रूर आता हूं। इस समय आप मोती निकालने के स्थान को ही देख सकेंगे, मोती निकालनेवालों को नहीं, क्योंकि मोती निकालने की ऋतु अभी आरम्भ नहीं हुई है। यहां मार्च के महीने तक कोई भी गोताखोर नहीं आता है। इसके बाद तीस दिन में वे अपना-अपना काम कर डालते हैं। यहाँ करीब तीन सौ नावें होती हैं। हर नाव पर दस खेनेवाले और दस गोताखोर होते हैं। गोताखोर दो दलों में बंट जाते हैं। उनमें से पांच एक बार डुबकी लगा कर मोती निकालते हैं और पांच दूसरी बार जाते हैं। ये लोग लगभग चालीस फुट की गहराई तक चले जाते हैं। समुद्र में गोता लगाने का इनका तरीका ही बड़ा विचित्र है। एक बड़ा-सा पत्थर डोरी में बाँधकर और उसे पैरों

से दबाकर ये पानी में उतर जाते हैं। डोरी ऊपर नाव में बंधी रहती है।''

मैंने कहा, ''यह तो बहुत पुराना तरीका है। अगर हम लोगों जैसी गोताखोरी की पोशाक इनके पास हो तो इन्हें बड़ा आराम मिल सकता है।''

कप्तान बोला, ''हां। लेकिन अभी इनके लिए वह दिन बहुत दूर है। जहां तक मुझे मालूम है, ये चालीस सेकण्ड से नब्बे सेकण्ड तक पानी के अन्दर रहते हैं।''

मैंने पूछा, ''लेकिन कप्तान, एक दिन में एक नाव कितने मोती निकाल लेती है ?

''चालीस से पचास हज़ार तक। लेकिन ये सभी मोती कीमती नहीं होते। इनमें से ज़्यादातर बहुत छोटे होते हैं और उन्हें पीसकर दवाइयां वगैरह बनाई जाती हैं। इस काम में खतरा भी बहुत है, क्योंकि उस जगह समुद्र में भयानक शार्क मछलियां बहुत अधिक संख्या में मंडराती हैं। अच्छा, अब हम लोग मनार की खाड़ी के पास पहुंच रहे हैं। कल सुबह चार बजे आपको जगा दिया जाएगा। हम लोग तब मोतियों की इस खान को देखने चलेंगें।''

दूसरे दिन सुबह बहुत तड़के ही हम लोग तैयार हो गए। जब मैं अपने साथियों के साथ ऊपर 'नॉटिलस' के चबूतरे पर पहुंचा तो वहां कप्तान पहले से हमारी प्रतीक्षा कर रहा था। नाव तैयार थी। पांच खलासी हाथों में डांडें लेकर नाव में मौजूद थे।

हमारी नाव बड़ी तेज़ी से लंका द्वीप के पश्चिमी किनारे की ओर मनार की खाड़ी में चली जा रही थी। सुबह 6 बजे तक हम ज़मीन के बहुत पास तक पहुंच गए। वहां से जब किनारे की दूरी लगभग पांच मील रह गई तो कप्तान के कहने पर हम तीनों ने गोताखोरी की पोशाकें पहन लीं।

तैयार होकर हम लोग एक-एक करके पानी में उतर गए। अब

तक ऊपर आसमान में सूरज निकल आया था, इसलिए नीचे तलहटी की वस्तुएं साफ-साफ दिखाई पड़ रही थीं। यहां की ज़मीन समतल थी। आसपास केकड़े और कछुए दौड़ रहे थे। थोड़ी ही देर में हम मोतियों के मैदान के किनारे पहुंच गए। यहाँ लाखों की संख्या में मोतियों की सीपें बिखरी पड़ी थीं। सीप के दोनों पल्ले बराबर होते हैं। ये बाहर से देखने में बहुत भद्दे लगते हैं। बहुत-सी सीपें हरे रंग के धागे जैसी चीज़ से बंधी होती हैं। ये नई सीपें होती हैं। पुरानी-पुरानी सीपें काले धागे जैसी चीज़ से बंधी होती हैं। ये दस-साल या उससे भी पुरानी होती हैं। इनमें से कुछ पांच इंच या उससे भी अधिक लम्बी होती हैं।

थोड़ी देर में कप्तान हमें एक चट्टान के पास एक बड़ी-सी गुफा के मुंह पर ले आया। वहां रोशनी साफ-साफ नहीं पहुंच रही थी। हम भी कप्तान के पीछे-पीछे गुफा में घुसे। अन्दर पहुंचने पर कप्तान एक गड्ढे के पास रुक गया। वहां उसने एक अजीब-सी वस्तु की ओर इशारा किया। मैंने देखा, वह एक बहुत बड़ी सीप थी और एक चमकदार चट्टान में रेशों में चिपकी हुई थी। यह सीप इस गुफा में अकेली बढ़ रही थी। कप्तान ने नीचे बैठकर अपना छुरा सीप के पल्लों के बीच में डाल दिया। फिर उसने पल्लों को चौड़ा करके मुझे दिखाया। उसके अन्दर मुझे एक नारियल के आकार का मोती दिखाई दिया। मैंने हाथ बढ़ाकर उसे छूना चाहा, लेकिन कप्तान ने मुझे मना कर दिया। फिर उसने सीप को बन्द करके उसी जगह पर संभालकर रख दिया।

मुझे यह समझते देर नहीं लगी कि कप्तान इसी विचित्र मोती को दिखाने के लिए हमें यहां तक लाया है। बाद में ऊपर आने पर मुझे कप्तान ने बताया कि वह हर साल इस मौसम में यहां आता और अपने मोती की खोज-खबर लेता है।

गुफा से बाहर निकलकर हम लोग कुछ देर तक इधर-उधर घूमते रहे। अचानक एक जगह कप्तान रुक गया और उसने इशारे से हम लोगों को अपने पास बुलाया। हमने देखा, थोड़ी दूर पर एक हाथ से

रस्सी को पकड़े एक आदमी मोती बटोर रहा था। देखते-देखते वह रस्सी के सहारे ऊपर चला गया। ऊपर नाव में अपनी झोली खाली करके वह फिर नीचे उतर आया। हम उसे साफ-साफ देख रहे थे, लेकिन वह हमें नहीं देख पाया। थोड़ी ही देर बाद अचानक एक बड़े जीव की छाया उसके ऊपर दिखाई पड़ी और देखते-देखते एक बड़ी भारी शार्क मुँह फैलाकर उसकी ओर झपटी। किसी तरह वह एक ओर हटकर बच गया, लेकिन शार्क की पूंछ से उसके हाथ में चोट आ गई और रस्सी से उसका हाथ छूट गया। वह पानी में गोते लगाने लगा। शार्क ने उलटकर फिर उस पर हमला किया। लेकिन इसी बीच कप्तान उसकी मदद के लिए पहुंच गया। कप्तान ने अपने छुरे से शार्क पर वार किया, लेकिन शार्क मरी नहीं। उसके खून से वहां आसपास का पानी लाल होने लगा। अब शार्क से कप्तान की लड़ाई होने लगी। हम लोग दम साधे यह सब देख रहे थे। हमारी समझ में नहीं आ रहा था कि अब क्या किया जाए ! इतने में नेडलैण्ड ने मौका देखकर अपना हारपून शार्क की ओर फेंका। हारपून शार्क के कलेजे में घुस गया और उसने छटपटाकर दम तोड़ दिया।

उधर कप्तान ने उस गोताखोर को अपनी पीठ पर लादा और फिर हम सब ऊपर उसकी नाव के पास इकट्ठे हो गए। कप्तान ने उसको नाव में रखा और उसके पेट से पानी निकाला। काफी देर बाद वह होश में आया। आंखें खोलने पर वह हम लोगों को देखकर डर गया। वह कोई गरीब भारतीय गोताखोर था। कप्तान ने तुरन्त मोतियों से भरी एक थैली उसके हाथ पर रख दी और तुरन्त हम लोग पानी में डुबकी लगाकर वहां से दूर निकल आए। लगभग आधे घंटे बाद हम 'नॉटिलस' में पहुंच गए।

अब 'नॉटिलस' मालदीव और लक्षदीव के पास से होती हुई अरब सागर में आगे बढ़ चली। कुछ दिनों तक हमने फारस की खाड़ी का चक्कर लगाया और फिर हम लालसागर पहुंच गए। वहां हमने पहली



शार्क ने हम पर हमला किया।

बार समुद्र की तलहटी में मीलों दूर फैला स्पंज देखा। स्पंज न तो वनस्पति ही है और न जीव ही। यह समुद्र की तलहटी में पाई जाने वाली एक विशेष प्रकार की सजीव वस्तु होती है।

एक दिन जब हम 'नॉटिलस' के चबूतरे पर हवा खा रहे थे तो कप्तान ने हमें लालसागर के बारे में बहुत-सी बातें बताईं। उसने बताया कि एक तरह की लाल समुद्री सेवार के कारण इस सागर का पानी दूर से कुछ लाल-सा नज़र आता है।

इसके बाद कप्तान रहस्यमय ढंग से मुस्कराता हुआ बोला, ''प्रोफेसर साहब, क्या आप विश्वास कर सकते हैं कि कल 'नॉटिलस' भूमध्यसागर में पहुंच जाएगी ?''

मुझे उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ। मैंने कहा, ''कप्तान, मुझे यह पता है कि 'नॉटिलस' बहुत तेज़ रफ्तार से चल सकती है, लेकिन फिर भी यह कुछ ही घंटों में पूरे अफ्रीका महाद्वीप का चक्कर लगाकर कल तक भूमध्यसागर में पहुंच जाएगी, इस बात पर मुझे विश्वास नहीं हो रहा है।''

कप्तान ने कहा, ''प्रोफेसर साहब, मैंने यह कब कहा कि 'नॉटिलस' अफ्रीका का चक्कर काटकर भूमध्यसागर में पहुंचेगी। आपने यह तो सुना ही होगा कि कुछ लोगों ने स्वेज़ नहर बनाने का प्रस्ताव रखा है। जब वह नहर बन जाएगी तो जहाज़ सीधे लालसागर से भूमध्यसागर में जा सकेंगे। लेकिन मुझे पानी के नीचे-ही-नीचे लालसागर से भूमध्यसागर में जाने का रास्ता मालूम है। और नीचे एक सुरंग है, जिसको मैंने 'अब्राहम सुरंग' नाम दे रखा है। स्वेज़ का स्थल डमरूमध्य ऊपर से तो बालू का है, लेकिन कुछ गहराई में लगभग 150 फुट के बाद वहां चट्टानें हैं। इन्हीं चट्टानों में नीचे एक पतली सुरंग है।''

मैंने कहा, ''लेकिन पृथ्वी के निवासियों को आज तक इस सुरंग का पता नहीं लग सका। आपने इसका पता कैसे लगाया ?''

''प्रोफेसर, मैंने इस सुरंग का पता तर्क से लगाया। मैंने देखा कि

लालसागर और भूमध्यसागर में कुछ मछलियां एक ही जाति की हैं। मैंने सोचा कि ये मछलियां ज़रूर एक सागर से दूसरे सागर में तैरकर पहुंची होंगी। मैंने एक बार स्वेज़ के पास काफी संख्या में मछलियां पकड़ीं और उनकी पूंछ में धातु की एक-एक अंगूठी पहनाकर उन्हें लालसागर में छोड़ दिया। कुछ महीनों बाद मुझे वही मछलियां सीरिया के तट के पास भूमध्यसागर में मिलीं। आज रात को हम उसी सुरंग से गुज़रेंगे।''

उस रात कप्तान मुझे अपने साथ 'नॉटिलस' के कंट्रोलरूम में ले गया। जब सुरंग पास आने लगी तो टंकियों को पानी से भर दिया गया और 'नॉटिलस' तीस फुट अधिक नीचे पहुंच गई।

कप्तान ने मुझसे कहा, ''अब मेरा रास्ता आ रहा है। इस सुरंग में से पनडुब्बी को निकालने का काम बहुत मुश्किल है। इस समय 'नॉटिलस' का संचालन मैं खुद करता हूं।''

10 बजकर 15 मिनट पर कप्तान ने पतवार को संभालने वाला हैंडिल अपने हाथ में ले लिया। उसने बहुत सावधानी के साथ 'नॉटिलस' को सुरंग के अन्दर पहुंचाया। सुरंग में से गुज़रते समय 'नॉटिलस' की रोशनियां जला दी गईं और मैंने खिड़की के शीशे में से साफ-साफ देखा कि 'नॉटिलस' एक बहुत तंग गली में से गुज़र रही थी। पन्द्रह मिनट में ही वह सुरंग पार करके भूमध्यसागर में निकल आई।

कुछ दिनों बाद एक घटना घटी, जिसका मैं कोई अर्थ न समझ सका। 14 फरवरी की बात है कि मैं कप्तान के साथ उसके कमरे में बैठा था। वह नक्शा देखने में व्यस्त था और मैं ख़िड़की से समुद्र के दृश्य का आनन्द ले रहा था। अचानक पानी में एक आदमी दिखाई दिया। वह एक गोताखोर था। कमर में चमड़े का एक थैला लटकाए वह बड़ी तेज़ी से तैर रहा था। कभी-कभी वह सतह पर सांस लेने के लिए चला जाता था और फिर गोता लगाकर अन्दर आ जाता था।

एक बार वह आदमी 'नॉटिलस' के बहुत पास आ गया। उसका

चेहरा शीशे में दिखाई पड़ने लगा। उसने हम लोगों की ओर ध्यान से देखा और हाथ से कुछ इशारा किया। कप्तान ने भी जवाब में इशारा किया। वह तुरन्त सतह पर चला गया।

कप्तान ने मुझसे कहा, ''प्रोफेसर साहब, आप परेशान न हों। यह मेटापान अंतरीप का निकोलस नामक गोताखोर है। यह बहुत अच्छा तैराक और अनुभवी गोताखोर है। यह थल से अधिक जल में रहता है और एक द्वीप से दूसरे द्वीप की यात्रा किया करता है।''

इसके बाद कप्तान नेमो ने एक तिजोरी खोली और उसमें से सोने की कई ईंटें निकालकर एक छोटे-से संदूक में रखीं। इसके बाद उसने बटन दबाया। चार खलासी कमरे में आए और संदूक को उठाकर ले गए। जब वे संदूक को मेरे पास से ले जाने लगे तो मैंने देखा, उसपर ग्रीक भाषा में कोई पता लिखा था। थोड़ी देर बाद मैंने ऊपर छत् पर दरवाज़ा खुलने और कुछ गरारियों के चलने की आवाज़ सुनी। मुझे समझते देर नहीं लगी कि वह संदूक उसी रहस्यमय गोताखोर को सौंप दिया गया है। यह गोताखोर कौन था और उसे कप्तान ने सोना क्यों दिया और कप्तान के पास इतना सोना कहां से आया ? ये सारी बातें मेरे लिए बड़ी रहस्यमय थीं। लेकिन इस सबके बारे में कप्तान से पूछने की मेरी हिम्मत नहीं हुई और उसने भी इस सम्बन्ध में कुछ नहीं बताया।

कुछ आगे चलकर 'नॉटिलस' समुद्र की तलहटी में स्थित एक ज्वालामुखी के पास से गुज़री। पानी की गर्मी धीरे-धीरे बढ़ने लगी थी। ज्वालामुखी के बिलकुल पास जाना तो संभव नहीं था, क्योंकि वहां पानी बहुत तेज़ी से उबल रहा था। रह-रहकर ज्वालामुखी के मुंह में लाल चमकदार लपट दिखाई पड़ती थी और बहुत ज़ोरों का विस्फोट होता था। विस्फोट के समय गंधक मिली हुई गैस के बादल ज्वालामुखी के मुंह से बड़ी तेज़ी से निकलते थे और आस-पास के समुद्र में मटमैला सफेद-सा पानी फैल जाता था।

भूमध्यसागर ऐसी जगह स्थित है, जहां हमेशा बहुत बड़ी संख्या

में जहाज़ों का आना-जाना लगा रहता है। इस क्षेत्र में तूफान भी बहुत अधिक आते हैं, इसलिए सैकड़ों जहाज़ नष्ट-भ्रष्ट होकर इसकी तलहटी में वर्षों से पड़े हुए हैं। इनमें अत्यन्त प्राचीनकाल के व्यापारिक जहाज़ भी हैं और उन समुद्री डाकुओं के डूबे हुए जहाज़ भी हैं जो कभी इस क्षेत्र के समुद्रों में लूट-मार किया करते थे। हमने समुद्र की तलहटी में ऐसे अनेक नये-पुराने जहाज़ों के डूबे हुए अवशेष देखे। कुछ दिनों बाद 'नॉटिलस' जिब्राल्टर जलडमरू मध्य को पार करके अटलांटिक महासागर में निकल आई।

हम पुर्तगाल के समुद्री किनारे के साथ-साथ उत्तर की ओर बढ़ रहे थे। यहां से फारस और इंग्लैण्ड दूर नहीं थे।

नेडलैण्ड का कहना था कि अब हम लोगों को मौका देखकर 'नॉटिलस' से भाग निकलना चाहिए। अब हम ऐसे समुद्र में हैं, जहां से अपने देश वापस लौटना हमारे लिए कठिन नहीं होगा। कोई न कोई जहाज़ हमें समुद्र में से उठा लेगा और किनारे पर पहुंचा देगा !

मुझे नेडलैण्ड की बात ठीक मालूम हो रही थी। अगर हमें भागना ही था तो इससे अच्छा मौका और क्या हो सकता था !

कप्तान कई दिनों से मुझे दिखाई नहीं पड़ता था। शायद वह किसी काम में लगा था। इन दिनों जहाज़ के खलासियों की संख्या भी मुझे कम मालूम हो रही थी।

नेडलैण्ड और कन्सील ने नाव में कुछ ज़रूरी सामान भी रख लिया था। यह तय हुआ कि रात को 9 बजे हम लोग चुपके से 'नॉटिलस' में से निकलकर नाव में पहुंच जाएंगे और फिर पेच खोलकर नाव को पनडुब्बी से अलग कर लेंगे। मैं अपना सामान लेकर इन्तज़ार करने लगा। सामान में मेरी डायरी के सिवा और क्या था !

मैं कपड़े पहनकर लाइब्रेरी में बैठा नेडलैण्ड के इशारे का इन्तज़ार कर रहा था। इतने में अचानक कप्तान नेमो वहां आ पहुंचा। मेरा दिल ज़ोरों से धड़कने लगा। मैंने सोचा, कहीं कप्तान को हमारी योजना का

पता तो नहीं चल गया। लेकिन पास आकर वह बोला, ''कहिए प्रोफेसर साहब, क्या हाल हैं ? कई दिनों से मैं आपसे मिल नहीं सका। क्या आप जानना चाहते हैं कि आजकल हम लोग कहां काम में लगे हैं ! आइए, इधर आइए, खिड़की के पास !''

कप्तान ने बटन दबाकर खिड़की खोल दी। मैंने देखा, 'नॉटिलस' पानी में स्थिर खड़ी थी और नीचे काफी दूर तक उसकी सर्चलाइट का प्रकाश फैला हुआ था। नीचे तलहटी में मुझे एक बड़ा और पुराना जहाज़ उलटा पड़ा हुआ दिखाई दिया। कुछ खलासी गोताखोरी की पोशाक पहने बड़े-बड़े बक्सों और पीपों को कुल्हाड़ी से तोड़ रहे थे। वे उनमें से सोना और चांदी की ईंटें निकालकर 'नॉटिलस' की केबिन में पहुंचाते थे और फिर वापस जाकर अपने काम में लग जाते थे। कुछ खलासी डूबे हुए जहाज़ के भीतरी भागों की तलाशी ले रहे थे। हम लोग काफी देर तक इस दृश्य को देखते रहे। कप्तान नेमो ने मुझसे कहा, ''तो प्रोफेसर साहब, मेरा ख्याल है, अब आपने समझ लिया होगा कि मेरे पास धन कहां से आता है !''

मैंने कहा, ''तो आप इस तरह सोना बटोरते हैं !''

''नहीं, वैसे मैं कभी-कभी समुद्र की तलहटी में स्थित सोने और चांदी की खानों की खुदाई भी करवाता हूं। लेकिन वह तरीका मेरे लिए बड़ा महंगा पड़ जाता है। इस तरह खोदकर बटोरी गई धातु को मुझे पनडुब्बी में ही साफ कराना पड़ता है। इसलिए अगर कोई पुराना डूबा हुआ जहाज़ मिल जाता है तो मैं अच्छी तरह से उसकी तलाशी लेता हूं।''

मैंने उससे पूछा, ''लेकिन कप्तान, इतने धन का आप क्या करते हैं ?''

वह बोला, ''मैं इस धन से उन गरीब देशों की मदद करता हूं, जिन्हें बड़े देशों ने गुलाम बना रखा है और जहां के लोग अपनी आज़ादी के लिए लड़ रहे हैं। मैं उनकी स्वाधीनता की लड़ाई में धन देकर उनकी

सहायता करता हूं। उस दिन आपने देखा ही होगा कि उस ग्रीक गोताखोर निकोलस को मैंने सोने की कुछ ईंटें दी थीं। उसने वह धन अपने देश के क्रान्तिकारी नेताओं के पास पहुंचा दिया होगा।''

यह कहकर कप्तान नेमो चुप हो गया। थोड़ी देर बाद वह बोला, ''प्रोफेसर साहब, आपको तो पता ही होगा कि इतिहास की बहुत पुरानी पुस्तकों में ऐसे एक महाद्वीप का ज़िक्र आता है, जो बाद में पूरे का पूरा एटलांटिक महासागर में डूब गया था। इस महाद्वीप का नाम एटलांटिस बताया गया है। बहुत-से इतिहासकारों ने इस पर विश्वास नहीं किया है और इसे कवियों की एक कल्पनामात्र माना है। लेकिन कल तक हमारी पनडुब्बी एटलांटिस के पास पहुंच जाएगी। अगर आप उस महाद्वीप की सैर करना चाहें तो कल शाम को तैयार रहें।''

कप्तान के चले जाने के कुछ देर बाद नेडलैण्ड मेरे पास आया। वह बहुत नाराज़ था। उसने कहा, ''प्रोफेसर साहब, यह क्या हो गया ? मैं तो आपका इंतज़ार कर रहा था और आप यहां कप्तान के साथ गप्पें मार रहे थे। लेकिन अब हो ही क्या सकता है ? 'नॉटिलस' यूरोप के समुद्री तट से बहुत दूर निकल आई है। कप्तान नेमो अब इसे बहुत तेज़ रफ्तार से दौड़ा रहा है। कुछ समय पहले मुझे यह स्थिर खड़ी हुई मालूम हुई थी, इसीलिए मुझे यहां से निकल भागने की उम्मीद हो गई थी। अब क्या किया जाए—समझ में नहीं आता।''

मैंने नेडलैण्ड को डूबे हुए जहाज़ों में से सोना बटोरने के बारे में बताया, लेकिन उसने इसमें कोई दिलचस्पी नहीं ली। उसे एटलांटिस महाद्वीप की यात्रा की भी कोई इच्छा नहीं थी। वह थोड़ी देर बाद बड़बड़ाता हुआ वहां से चला गया।

दूसरे दिन ठीक समय पर मैं कप्तान के पास पहुंचा। कप्तान तैयार बैठा था। जब हम लोग केबिन की ओर बढ़ने लगे तो मैंने कप्तान को याद दिलाया कि लैम्प भी साथ ले लिए जाएं, क्योंकि रात का समय है और समुद्र की तलहटी में इस समय घोर अन्धकार छाया होगा।

वह मुस्कराकर बोला, "नहीं प्रोफेसर साहब, लैम्प की कोई ज़रूरत नहीं है। आप आइए तो सही मेरे साथ !"

कप्तान की बात सही थी। जब हम नीचे पहुंचे तो मैंने देखा कि दूर कहीं एक मशाल-सी जल रही थी और उसकी रोशनी चारों ओर समुद्र-तल में फैली हुई थी। धीरे-धीरे हम आगे बढ़ने लगे। यह प्रकाश कुछ मील दूर स्थित समुद्री ज्वालामुखी से निकलकर चारों ओर फैल रहा था। इस धुंधले प्रकाश में उस डूबे हुए महाद्वीप के एक नगर को देखकर थोड़ी देर के लिए मैं दंग रह गया। चारों ओर ऊबड़-खाबड़ रास्ते फैले हुए थे। दूर पर सुन्दर मकानों के डूबे हुए खंडहर भी दिखाई देर रहे थे। अब उनपर समुद्री घास-फूस और सेवार वगैरह उग आई थीं। मुझे वहां महलों और मन्दिरों के चिह्न भी दिखाई दिए। मैं कप्तान नेमो के साथ-साथ काफी देर तक वहां घूमता रहा। कुछ देर बाद हम लोग वापस 'नॉटिलस' में लौट आए।

इसके लगभग एक सप्ताह बाद 'नॉटिलस' ने समुद्र में बनी एक ऐसी छोटी झील में प्रवेश किया, जो पानी में डूबे हुए किसी ज्वालामुखी का मुंह थी। यह ज्वालामुखी अब ठंडा पड़ चुका था और उसके मुंह में पानी भर आया था। इस पहाड़ के एक किनारे पर एक छोटी-सी सुरंग थी, जिसके अन्दर से होकर ज्वालामुखी के मुंह में पहुंचा जा सकता था। कप्तान नेमो ने बहुत सोच-समझकर यह जगह 'नॉटिलस' के लिए चुनी थी। यहां वह हफ्तों दुनिया वालों की नज़र से बचकर अपनी पनडुब्बी को पानी की सतह पर रख सकता था। एक तरह से यह खाड़ी 'नॉटिलस' की बन्दरगाह थी। इसके अलावा यहां आसपास समुद्र की तलहटी में कोयले की कुछ खानें थीं। इन्हीं खानों में से कप्तान नेमो अपनी ज़रूरत के लिए कोयला प्राप्त करता था। इस कोयले से वह सोडियम तैयार करता था और सोडियम से 'नॉटिलस' के लिए बिजली तैयार की जाती थी।

जब 'नॉटिलस' के दूसरे जहाज़ी कोयला बटोरने में लगे रहते थे

तो मैं नेडलैण्ड और कन्सील के साथ अक्सर आसपास की पहाड़ियों पर घूमने के लिए निकल जाता था। ठंडे लावे से बनी ये पहाड़ियां उस खाड़ी के चारों ओर फैली हुई थीं और इनमें जगह-जगह गुफाएं बनी थीं। दिन के समय हम लोग अक्सर इन गुफाओं में बैठकर बातें करते थे। नेडलैण्ड बहुत दुखी होकर कहता था, "प्रोफेसर साहब, आपने इस कैद से छूटने का एक सुनहरा मौका खो दिया। अब पता नहीं कब ऐसा मौका हाथ लगेगा। अब तो ऐसा लगता है कि हम कभी भी यहां से बचकर नहीं निकल सकेंगे। कप्तान अब यूरोप के तट से बहुत दूर निकल आया है और बहुत गहरे समुद्र में पनडुब्बी को ले जाता है। इधर कई दिनों से वह 'नॉटिलस' की रफ्तार भी बहुत तेज़ रखने लगा है। अब तो भगवान का ही भरोसा है। यह दुष्ट कप्तान तो शायद अब कभी भी हमें नहीं छोड़ेगा।"

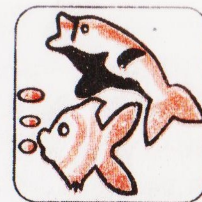
लेकिन अब मैं इस विषय पर ज़्यादा सोच-विचार नहीं करना चाहता था, क्योंकि अभी इस विचित्र पनडुब्बी के ज़रिये संसार के शेष बचे हुए समुद्रों की भी यात्रा करनी बाकी थी।

जब 'नॉटिलस' एटलांटिक महासागर को पार करके अमरीका के पास पहुंची तो कप्तान उसे दक्षिण की ओर चलाने लगा। इस यात्रा में हम लोग अधिकतर समुद्र की सतह पर ही रहे। जब हम दक्षिणी अमरीका के अंतिम सिरे गुडहोप अंतरीप के पास पहुंचे तो एक बार कुछ जहाज़ दिखाई पड़े थे। एक दिन ह्वेल का शिकार करने वाली नावों ने 'नॉटिलस' को एक बड़ी विशेष प्रकार की ह्वेल समझकर उसका पीछा किया। लेकिन कप्तान ने 'नॉटिलस' को डुबकी लगवाकर उन लोगों से छुट्टी ले ली। 13 मार्च के आसपास हम लोग प्रशान्त महासागर में प्रवेश करके उस स्थान के पास पहुंचे, जहां एक अमरीकी जहाज़ 'कांग्रेस' के कप्तान ने अधिक-से-अधिक गहराई को नापने का प्रयास किया था। लेकिन उसके यंत्र 7000 फैदम से अधिक नीचे नहीं पहुंच सके थे।

यहां पहुंचकर कप्तान नेमो को भी गहरे समुद्र में प्रयोग की धुन

सवार हुई। उसने एक बार 'नॉटिलस' के सभी यंत्रों को देखा-भाला और आवश्यक तैयारी करने के बाद निश्चित समय पर उसने 'नॉटिलस' को गहराई में ले जाना शुरू किया। 'नॉटिलस' की बनावट में हालांकि बड़ी कारीगरी से काम लिया गया था, लेकिन एक सीमा से अधिक गहराई में जाने के लिए टंकियों को भरना ही काफी नहीं था। इसके लिए कप्तान ने विशेष व्यवस्था कर रखी थी। उसने 'नॉटिलस' के निचले हिस्से में कई पंख लगा रखे थे.। उनके चलने से पनडुब्बी गहरे सागर में घुसने लगी।

हमने वह सतह पार की, जहां साधारण मछलियां जीवित रह सकती थीं। अधिक गहराई में ये मछलियां नहीं जा पातीं। मैंने मोनोमीटर पर नज़र डाली। हम लोग 3000 फैदम की गहराई में थे। अभी हम सीधे नीचे की ओर एक ही घंटा चले थे। पानी शांत और पारदर्शी था। एक घंटा और बीता और हम एक मील यानी 6500 फैदम से भी अधिक की गहराई में पहुंच गए। लेकिन तलहटी का अब भी कोई निशान नहीं दिखाई दिया। 7000 फैदम की गहराई में मुझे पानी के अन्दर काली-काली पहाड़ी चट्टानें दिखाई पड़ने लगीं। समुद्र की गहराई का अभी भी कोई पता नहीं था। अधिक दबाव पड़ने के बावजूद 'नॉटिलस' नीचे चलती ही गई। बोल्टों के पास जोड़ों की चद्दरें कांप रही थीं। लोहे के छड़ झुके जा रहे थे, मुझे डर लगने लगा कि कहीं अधिक दबाव के कारण 'नॉटिलस' टूट-फूट न जाए। कुछ जीव अब भी दिखाई पड़ रहे थे, लेकिन उनकी बनावट उन मछलियों से बिलकुल ही भिन्न थी, जो समुद्र की ऊपरी सतह पर मिलती थीं। इस गहराई पर जो दृश्य मैंने देखा उसकी मैं कभी कल्पना भी नहीं कर सकता था। कप्तान ने 8000 फैदम की गहराई पर सर्च-लाइट के प्रकाश को और भी तेज़ किया। फिर कैमरे से कुछ फोटो खींचे। इसके बाद उसने 'नॉटिलस' का रुख ऊपर की ओर मोड़ दिया और तेज़ी से ऊपर आना शुरू किया।



7

14 मार्च की रात को कप्तान ने अचानक 'नॉटिलस' का रुख दक्षिण की ओर मोड़ दिया। अब तो मैंने सोचा कि दक्षिण अमरीका का चक्कर लगाकर प्रशान्त महासागर में पहुंचने के बाद हम पृथ्वी की एक परिक्रमा पूरी कर लेंगे। लेकिन अब कप्तान 'नॉटिलस' को दक्षिण ध्रुव की ओर ले जा रहा था। मुझे इसका कोई कारण समझ में नहीं आया। मैं कप्तान से भेंट की प्रतीक्षा करने लगा। अब हमें समुद्र की सतह पर बर्फ तैरती दिखाई दी। 'नॉटिलस' भी सतह पर ही चल रही थी। मेरे लिए यह दृश्य भी नया था। जैसे-जैसे हम दक्षिण की ओर बढ़ते गए, बर्फ के ये पहाड़ अधिक संख्या में दिखाई देने लगे। अब ध्रुवीय पक्षी भी सैकड़ों की संख्या में दिखाई देने लगे। वे 'नॉटिलस' को ह्वेल समझकर इसके ऊपर आ जाते थे और चोंच से इसकी प्लेटों पर आघात करते थे। धीरे-धीरे ठंड बढ़ती जा रही थी। कुछ ही समय में तापमान शून्य डिग्री सेंटीग्रेड से भी तीन डिग्री नीचे हो गया। हम सब लोगों को ध्रुवीय रीछों की खालों के कपड़े पहनने के लिए दिए गए। पनडुब्बी का अन्दर का भाग बिजली से गर्म किया जाने लगा। 16 मार्च को हमने दक्षिण ध्रुवीय वृत्त पार किया। आगे चलकर बर्फ के मैदान ने हमारा रास्ता बन्द कर दिया। लेकिन कप्तान इससे भी नहीं रुका। उसने ज़ोर से टक्कर मारकर बर्फ में प्रवेश किया। 'नॉटिलस' बहुत ज़ोर की आवाज़ करती हुई और बर्फ को तोड़ती हुई आगे बढ़ी। अंत में बर्फ के एक बहुत ऊंचे पहाड़ ने फिर हमारा रास्ता रोक दिया। पानी का कहीं पता नहीं था। चारों ओर बर्फ का राज्य था। 'नॉटिलस' रुकने के लिए मजबूर हो गई। काफी

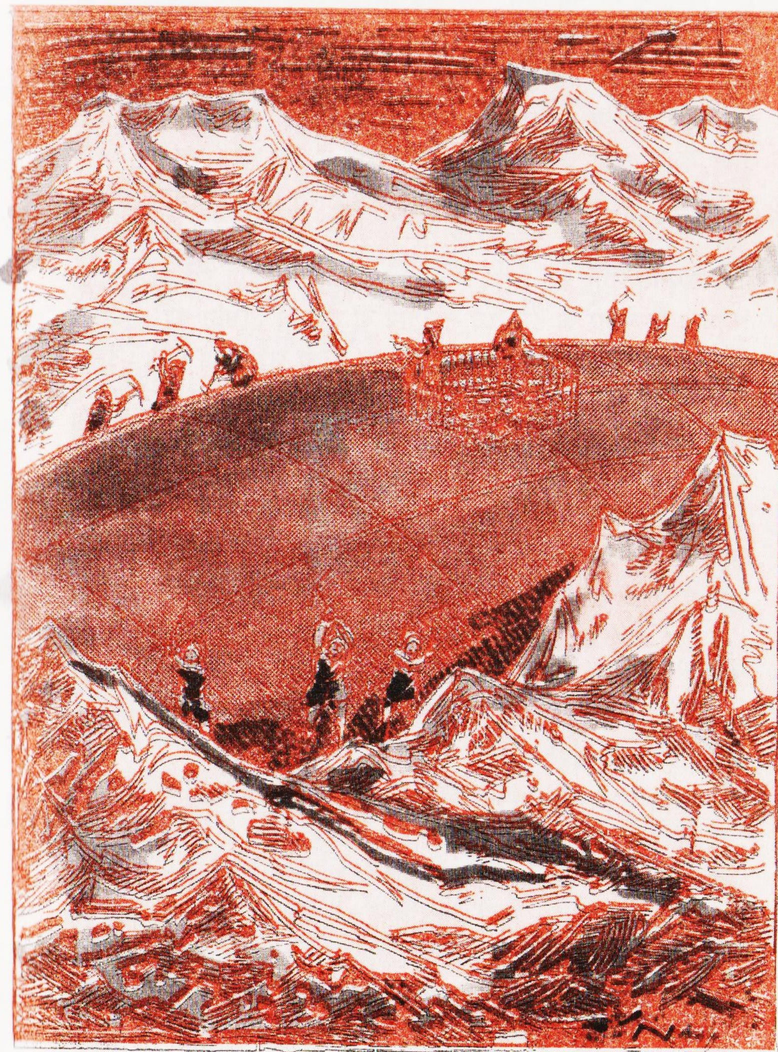
कोशिश करने के बावजूद 'नॉटिलस' बर्फ को तोड़ न सकी। कप्तान ने उसे हटाने की कोशिश की, लेकिन अब पीछे हटना भी संभव नहीं हो रहा था।

उसी दिन लाइब्रेरी में कप्तान से मेरी मुलाकात हो गई। वह अपने नक्शे पर झुका हुआ कुछ हिसाब लगा रहा था। मैंने उससे पूछा, "कप्तान, अब क्या होगा ? 'नॉटिलस' को अब आप यहां से कैसे निकालेंगे ?"

उसने मुस्कराकर कहा, "प्रोफेसर साहब, आप घबराएं नहीं। आप यह क्यों भूल जाते हैं कि मेरी पनडुब्बी कोई मामूली जहाज़ नहीं है। यह हर प्रकार की कठिनाइयों का सामना कर सकती है। हम बर्फ के नीचे-नीचे आगे बढ़ेंगे और ध्रुव प्रदेश के दूसरी ओर निकल जाएंगे। आपको थोड़ी-सी तकलीफ होगी, क्योंकि इस बीच 'नॉटिलस' को बराबर बर्फ के नीचे ही चलना पड़ेगा। मेरा ख्याल है कि बहुत गहराई में पानी जमा नहीं होगा और 'नॉटिलस' आसानी से पार हो जाएगी।

इसके बाद कप्तान के आदेश पर 'नॉटिलस' की टंकियों में खूब दबाकर हवा भरी जाने लगी। सारी तैयारी करने के बाद 'नॉटिलस' ने बर्फ में ही डुबकी लगाई। उसके विशेष प्रकार के पंखे बर्फ को छीलकर गड्ढा बनाते चले गए और अंत में गहराई पर जब पानी मिल गया तो पनडुब्बी आगे बढ़ने लगी। तीसरे दिन जब पनडुब्बी ऊपर आई तो हम खुले हुए समुद्र में थे। कुछ आगे चलने पर हमें बर्फ का एक द्वीप मिला, जिस पर समुद्री चिड़ियों ने घोंसले बना रखे थे। यहां हमने बहुत-सी पेंग्विन और पेलीकन चिड़ियों का शिकार किया। ध्रुव प्रदेश में छः महीने का दिन और छः महीने की रात होती है, रात के समय भी हल्का-सा प्रकाश छाया रहता है और देखने में कोई कठिनाई नहीं होती। यहां कप्तान नेमो ने कई प्रकार के परीक्षण किए।

इसके बाद हम और आगे बढ़े। आगे फिर मीलों लम्बा बर्फीला प्रदेश मिला। कप्तान ने बताया कि इसी प्रदेश के ठीक बीचोंबीच दक्षिणी ध्रुव है। हम वहां परीक्षण करेंगे और उसके बाद आगे बढ़ेंगे।



बर्फ में फंसी नॉटिलस के खलासी बर्फ का पहाड़ काटते हुए।

कप्तान ने 'नॉटिलस' को कुछ दूर ही छोड़ दिया। उसने नाव में कुछ खलासी अपने साथ लिए और आवश्यक यंत्र भी रखवा लिए। मुझे साथ चलने का निमन्त्रण वह पहले ही दे चुका था। ध्रुव प्रदेश पर पहुंचकर हम कई मील तक बर्फ पर चलते रहे। चारों ओर जहां तक नज़र जाती थी, बर्फ-ही-बर्फ दिखाई दे रही थी। बर्फीली आंधी रुकने का नाम नहीं लेती थी। किसी तरह गिरते-पड़ते हम ठीक दक्षिणी ध्रुव पर पहुंच गए। कप्तान ने मेरे कंधे पर हाथ रखकर घोषणा की, "मैं कप्तान नेमो, 25 मार्च, सन् 1868 को 90 डिग्री दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचा। मैं संसार के इस छठे महाद्वीप के केन्द्रीय विभाग का अधिकार अपने हाथ में लेता हूं।" फिर उसने एक काला झंडा गाड़ दिया। इसके बाद वापस लौटते हुए उसने कहा, "प्रोफेसर साहब, यहां आने का मैं बहुत दिनों से इरादा कर रहा था। आज मेरी इच्छा पूरी हुई। अब हमें तुरन्त यहां से आगे बढ़ जाना चाहिए, क्योंकि कल छः महीने की रात शुरू होने वाली है। उस समय दक्षिणी ध्रुव बिलकुल जम जाता है। समुद्री जीव बर्फ में सूराख करके अन्दर चले जाते हैं। यहां की सभी चिड़ियां उड़कर उत्तर की ओर चली जाती हैं।"

22 मार्च को सुबह 6 बजे 'नॉटिलस' ने वहां से विदा होने की तैयारी शुरू की। वह धीरे-धीरे सागर में समाने लगी। नीचे जाकर वह 1000 फुट पर रुक गई और फिर 15 मील प्रति घंटा की चाल से उत्तर की ओर बढ़ने लगी।

शाम तक वह बर्फीली दीवार के नीचे-नीचे ही चलती रही।

किसी डूबे हुए पदार्थ से टक्कर लग जाने के डर से खिड़कियां आज बन्द ही रहीं। मैं दिन-भर अपने कमरे में बैठा डायरी लिखता रहा। कुछ देर बाद मुझे नींद आ गई। सुबह तीन बजे एक झटके से मैं जाग पड़ा और ध्यान से सुनने लगा। अचानक फिर एक ज़ोर का धक्का लगा और मैं कमरे में जा गिरा। मैं कप्तान के कमरे की ओर भागा, लेकिन कप्तान वहां नहीं था। थोड़ी देर में नेडलैण्ड और कन्सील भी घबराए

हुए वहां आ पहुंचे और उनके पीछे-पीछे ही कप्तान नेमो ने भी कमरे में प्रवेश किया। उसने बताया, "प्रोफेसर साहब, एक दुर्घटना हो गई है। बर्फ का पूरा पहाड़ उलट गया है और उसमें 'नॉटिलस' फंस गई है। अब जब तक बर्फ को काटा नहीं जाएगा, तब तक 'नॉटिलस' इसमें से निकल नहीं सकती।"

कप्तान काफी घबराया हुआ मालूम हो रहा था। उसकी बात सुनकर मेरे तो हाथ-पैर फूल गए। मैंने पूछा, "कप्तान, बर्फ की इस दीवार को काटने में कितना समय लगेगा, और फिर आप विश्वासपूर्वक यह कैसे कह सकते हैं कि इस दीवार की मोटाई कितनी है ?"

नेडलैण्ड ने झुंझलाकर मेज़ पर घूंसा मारते हुए कहा, "लो, अब मौत ही हमें यहां से छुड़ा सकेगी। हम समुद्र की सतह से न मालूम कितने फुट नीचे बर्फ के पहाड़ में फंस गए हैं। कप्तान साहब, अब क्या होगा ? क्या आपके साथ हमें भी अपनी जान देनी होगी ?"

कप्तान चुपचाप सीने पर हाथ बांधे खड़ा था। उसने शांति से उत्तर दिया, "हम लोग या तो डूबकर मर सकते हैं या हवा की कमी के कारण। भूख से मरने की कोई संभावना नहीं, क्योंकि खाना काफी मौजूद है। टंकियों की हवा दो दिन और चल सकती है, क्योंकि 36 घण्टे वैसे ही हमें पानी के अन्दर चलते-चलते हो गए हैं। अधिक से अधिक 48 घण्टे तक टंकियों की हवा और काम दे सकती है। मेरे खलासी गोताखोरी की पोशाकें पहनकर पता लगा रहे हैं कि दीवार किस जगह कम मोटी है।" इसके बाद वह वहां से चला गया।

हम तीनों की समझ में नहीं आया कि अब क्या किया जाए। हम इस तरह नहीं मरना चाहते थे। लेकिन अब हम कर ही क्या सकते थे ? अंत में नेडलैण्ड कप्तान के खलासियों की मदद करने के लिए चला गया और मैं कन्सील के पास बैठकर परिस्थिति पर विचार करने लगा।

दो घंटे बाद नेडलैण्ड थककर चला आया। दूसरे खलासी भी आ

गए। अब हमारी टोली भी चली। इस तरह बारी-बारी से हम लोग बर्फ काटने लगे। लेकिन 'नॉटिलस' टस से मस नहीं हो सकी। अन्दर की हवा धीरे-धीरे गंदी होती जा रही थी। अब उसमें सांस लेना मुश्किल हो गया था। दूसरे दिन दिन-भर फिर यही सिलसिला जारी रहा। शाम को हवा की सुरक्षित टंकियां खोलनी पड़ीं। अब 'नॉटिलस' पर बर्फ का दबाव बढ़ता जा रहा था। अगर उसे जल्दी ही बर्फ की इस दीवार में से बाहर नहीं निकाला जाता तो उसके टूटने का डर था। कप्तान एक के बाद एक टोली को बर्फ काटने के लिए भेजता था और खुद भी काम में लगा था। लेकिन ऐसा लगता था जैसे उसका दिमाग काम नहीं कर रहा है। वह बहुत चिंतित था। अचानक कप्तान को एक युक्ति सूझी और उसने चिल्लाकर खलासियों को हुक्म दिया, "उबलता हुआ पानी फेंककर छेद को बड़ा करने की कोशिश करो।" अब पनडुब्बी की सभी मशीनें पानी गर्म करने के काम में लगा दी गईं। गर्म पानी से बर्फ को काटने में थोड़ी सहायता मिली। लेकिन इधर हवा की टंकियां करीब-करीब खाली हो गई थीं। जिनमें हवा बाकी थी, वे काम करनेवालों के लिए थीं। 'नॉटिलस' के लिए ज़रा भी हवा न बची।

जब मैं काम से लौटकर 'नॉटिलस' में आया तो अधमरा-सा हो गया। सिर में दर्द था और नशा-सा सवार था। मेरे साथियों का भी यही हाल था। हम लोगों को बर्फ में फंसे हुए आज छः दिन हो गए थे। खुदाई का काम बहुत धीरे-धीरे हो रहा था। इस बात से कप्तान बहुत परेशान था। वह अपना कष्ट भूलकर दूसरों की जान बचाने की योजनाएं बना रहा था। दिन-रात की लगातार मेहनत से किसी तरह कुछ काम बना। 'नॉटिलस ' खुदे हुए सूराख में घुसने लगी। सभी खलासी पनडुब्बी में लौट आए और दरवाज़े बन्द कर लिए गए। पनडुब्बी के सभी पंखे पूरे ज़ोर से चल रहे थे और वह इंच-इंच करके बर्फ की दीवार में आगे बढ़ रही थी। उधर हवा की कमी के कारण हम लोगों का बुरा हाल था। सब लोग बेहोश होते जा रहे थे। जब मैं चक्कर खाकर ज़मीन

पर गिर पड़ा तो कन्सील ने अपना मोह त्यागकर मेरी जान बचाने का प्रयत्न किया। उसके यंत्र में कुछ हवा बच रही थी। उसने खुद सांस लेने की बजाय हवा मेरी नाक में पहुंचानी शुरू की। थोड़ी देर में मैं कुछ ठीक हुआ। मेरी नज़र घड़ी पर पड़ी। दिन के 11 बजे थे। आज 28 मार्च थी और 'नॉटिलस' के इंजिन 40 मील की रफ्तार से चल रहे थे, लेकिन पनडुब्बी बहुत धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी। एकाएक 'नॉटिलस' रुककर पीछे हटी और फिर तेज़ी से आगे बढ़कर उसने दीवार को टक्कर मारी। बर्फ टूट गई और शुद्ध हवा पनडुब्बी में तेज़ी से आने लगी।

हम लोग दौड़ते हुए चबूतरे पर जा पहुंचे। लेकिन हमें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि चबूतरे पर कप्तान या खलासियों में से कोई भी नहीं था। शायद वे सभी लोग अपनी-अपनी जगह पर काम में लगे हुए थे।

पनडुब्बी इस समय बहुत तेज़ रफ्तार से दौड़ रही थी। कुछ घंटों की हवा खाने के बाद हम लोग वापस नीचे लौट आए। थोड़ी देर बाद 'नॉटिलस' फिर से डुबकी मारकर पानी के अन्दर चलने लगी।

दूसरे दिन दोपहर से कुछ पहले जब 'नॉटिलस' समुद्र की सतह पर आई तो मुझे दक्षिणी अमेरिका का किनारा दिखाई पड़ा।

4 अप्रैल को हम पैरागुए देश से पचास मील दूर थे और उत्तर की ओर बढ़ रहे थे। कुछ समय बाद हमने मकर रेखा पार की। नेडलैण्ड मना रहा था कि कप्तान पनडुब्बी को ज़मीन के कुछ पास ले चले तो ज़्यादा अच्छा हो। अब उसने यहां से भाग निकलने का पक्का इरादा कर लिया था। लेकिन 'नॉटिलस' अपनी चाल धीमी नहीं कर रही थी। जब 11 अप्रैल को 'नॉटिलस' एकाएक ऊपर उठी तो हमें आमेज़न नदी का मुहाना दिखाई दिया। थोड़े ही समय में हमने भूमध्य रेखा पार कर ली। लेकिन 'नॉटिलस' से भाग निकलने की अभी कोई संभावना नज़र नहीं आ रही थी। नेडलैण्ड भी शायद यह समझ गया था, इसलिए वह मुझसे कुछ नहीं बोला। मैं अपना अधिकांश समय लाइब्रेरी में मनोरंजक

पुस्तकें पढ़ने में बिताता था।

कई दिनों तक 'नॉटिलस' अमरीका के तटों से दूर-दूर चलती रही। कप्तान मेक्सिको की खाड़ी या उसके आस-पास नहीं जाना चाहता था। रास्ते में अब कई द्वीप मिलने लगे थे। नेडलैण्ड बराबर अपनी योजना के बारे में सोचता रहता था। हम लोग 'नॉटिलस' में छः महीने से कैद थे और अब तक 17 हज़ार 'लीग' यानी 51 हज़ार मील की यात्रा कर चुके थे। नेडलैण्ड ने सुझाव दिया कि अब कप्तान से स्पष्ट बात कर ली जाए कि वह हम लोगों को अब कब तक इस पनडुब्बी में कैद रखेगा।

लेकिन यह व्यर्थ था। कप्तान नेमो से इसकी आशा करना मूर्खता थी। हमें अपने ऊपर ही भरोसा करना था। कप्तान कुछ समय से बहुत गंभीर हो गया था। वह अक्सर आराम करता रहता था और उसने हम लागों से मिलना-जुलना बन्द कर रखा था।

20 अप्रैल को 'नॉटिलस' 700 फैदम की गहराई में उतर आई। यहां निकट की ज़मीन पर पत्थरों के ढेर बिछे थे। गहराई में कुछ ऊंची समुद्री पहाड़ियों की चोटियां भी दिखाई पड़ती थीं। अचानक कन्सील ने आवाज़ देकर हमारा ध्यान खिड़की की ओर खींचा। नेडलैण्ड भी मेरे पास बैठा था। वह भी दौड़कर खिड़की पर पहुंच गया। उसने चिल्लाकर कहा, "ओह, कितना भयानक जीव है !"

यह आक्टोपस नाम का समुद्री दैत्य था। 32 फुट लम्बा यह भयानक जीव तेज़ी से दौड़ा चला आ रहा था, और अपनी हरी-हरी बड़ी आंखों से हमें घूर रहा था। इसके आठ पैर सिर के पास से शुरू होकर पीछे दूर तक फैले हुए थे। इसके शरीर पर लगभग 250 बड़े-बड़े छेद दिखाई पड़ रहे थे। अचानक हम इसके पास आ पहुंचे।

एकाएक 'नॉटिलस' एक धक्के के साथ रुक गई। वह अब भी पानी में ही थी। लेकिन आगे नहीं बढ़ पाती थी, क्योंकि उसकी चरखी के पंखे काम नहीं कर रहे थे। एक मिनट बाद ही कप्तान नेमो ने अपने एक अधिकारी के साथ कमरे में प्रवेश किया। वह कुछ असंतुष्ट-सा



हम पर बहुत-से आक्टोपसों ने एक साथ आक्रमण कर दिया।

मालूम हो रहा था। उसने मुझसे कुछ नहीं कहा। वह सीधा खिड़की की ओर गया और आक्टोपस को देखकर अपने साथी से कुछ बात करने लगा। उसके आदेश से खिड़कियां तुरन्त बन्द कर दी गईं। जब वह जाने लगा तो मैंने आगे बढ़कर उससे पूछा, "कप्तान, कितने आक्टोपस हैं ?"

उसने उत्तर दिया, "लगता है, बहुत हैं। हम उनसे आमने-सामने लड़ेंगे। इसलिए चरखी रोक दी गई है। मैं बिजली की गोलियों और कुल्हाड़ी से इन पर हमला करूंगा।"

नेडलैण्ड बीच में बोला, "अगर आप मेरी सहायता से इन्कार नहीं करें तो मैं इन परं अपने भाले से भी वार कर सकता हूं।"

कप्तान ने कहा, "ठीक है मि. नेडलैण्ड ! मैं आपकी सहायता स्वीकार करता हूं।"

मैंने कहा, "हम सब लोग आपके साथ चलेंगे।" यंह कहकर हम लोग कप्तान के पीछे-पीछे बीच के ज़ीने की ओर चल पड़े। वहां लगभग दस आदमी कुल्हाड़ियां लिए तैयार खड़े थे। कन्सील और मैंने भी एक-एक कुल्हाड़ी ले ली। नेडलैण्ड ने अपना हारपून संभाला। इस समय 'नॉटिलस' समुद्र की सतह पर आ गई। एक खलासी सबसे नीचे के ज़ीने पर खिड़की का बोल्ट खोल रहा था। तब एकाएक खिड़की ज़ोर से ऊपर उठ गई और आक्टोपस का एक लम्बा पैर चमका। कप्तान ने अपनी कुल्हाड़ी से उसे काट डाला। इस समय हम चबूतरे पर पहुंचने के लिए भीड़ लगाए खड़े थे। इतने में एक आक्टोपस के दो पैर खिड़की से अन्दर आ गए और एक खलासी को उठा ले गए।

कप्तान ज़ोर से चिल्लाया और उसके ऊपर झपटा। हम लोग भी उसके पीछे दौड़े। कितना भयानक दृश्य था ! आक्टोपस बेचारे खलासी को पकड़े था और वह ज़ोर-ज़ोर से सहायता के लिए चिल्ला रहा था।

अचानक खलासी पानी में गायब हो गया। अब उसे उस भयानक जीव से कौन छुड़ाए ! कप्तान नेमो आक्टोपस के शरीर पर चढ़ गया

और उसका दूसरा पैर भी काट डाला। अब सभी खलासी अपनी-अपनी कुल्हाड़ियां लेकर उसपर टूट पड़े।

भयानक बदबू आ रही थी। मैंने सोचा, उस आदमी की रक्षा होनी चाहिए, क्योंकि उसे पकड़नेवाले आक्टोपस के सात पैर काटे जा चुके थे। एक ही बाकी रह गया था। जब कप्तान अपने एक साथी के साथ उसकी ओर झपटा तो उस दैत्य ने अपने पेट की थैली में इकट्ठा किया हुआ काला-सा पदार्थ उगल दिया। हम लोग अन्धे हो गए। जब इस काले पदार्थ का बादल समाप्त हुआ तब तक आक्टोपस हमारे उस साथी के साथ वहां से गायब हो चुका था।

हम लोग मारे क्रोध के पागल हो रहे थे। कुछ आक्टोपस आक्रमण कर रहे थे। नेडलैण्ड बार-बार अपने हारपून को उनकी हरी-हरी आंखों में घुसेड़ता था। अपने साथी को हम न छुड़ा सके। मेरा दिल ज़ोरों से धड़क रहा था। इसी बीच नेडलैण्ड के ऊपर एक आक्टोपस ने आक्रमण किया। मैं उसकी सहायता के लिए झपटा। लेकिन इससे पहले कप्तान नेमो उसकी मदद के लिए पहुंच गया। इस बीच नेडलैण्ड ने लगभग पूरा हारपून आक्टोपस के पेट में घुसेड़ दिया। यह लड़ाई लगभग 15 मिनट तक चलती रही। फिर चोट खाए हुए आक्टोपस मोर्चा छोड़कर पानी में गायब हो गए।

कप्तान खून से लथपथ नेडलैण्ड के पास चुपचाप खड़ा समुद्र की ओर देख रहा था और अपने साथी को याद करके आंसू बहा रहा था।

इसके बाद कई दिन तक कप्तान फिर मुझे नहीं दिखाई दिया। अब 'नॉटिलस' बहामा चैनल के पास गल्फस्ट्रीम नाम की प्रसिद्ध समुद्री धारा में तेज़ी से आगे बढ़ती चली जा रही थी। इसकी मछलियां और इसका तापमान आसपास के समुद्री जल से बिलकुल भिन्न होता है। यह समुद्र में बहनेवाली एक विशाल नदी-सी है। इसकी औसत गहराई 3000 फुट और चौड़ाई 60 मील तक है।

दोपहर को मैं कन्सील के साथ ऊपर चबूतरे पर गया और उसे

गल्फस्ट्रीम की विशेषताएं समझाने लगा। मैंने उसे बताया कि गल्फस्ट्रीम से यूरोप के समुद्री तटों को गर्मी मिलती है और जाड़े के दिनों में वहां का समुद्र जमने नहीं पाता। इंग्लैंड को इस धारा से विशेष लाभ होता है। नमक की अधिकता के कारण इसका रंग गहरा नीला होता है। कभी-कभी रात में इसका पानी चमकता मालूम होता है। 'नॉटिलस' बराबर इसी धारा में आगे बढ़ती जा रही थी।

8 मई को हम लोग उत्तरी अमरीका के पास जा पहुंचे। यहां गल्फस्ट्रीम तट के काफी समीप बहती है। 'नॉटिलस' इसमें झूमती हुई चली जा रही थी। मैंने सोचा कि इस समय भाग निकलने का अच्छा मौका है, क्योंकि इस धारा के समीप अनेक छोटे-बड़े द्वीप हैं तथा न्यूयार्क और बोस्टन से मेक्सिको की खाड़ी के बीच सैकड़ों स्टीमर चलते रहते हैं। दिन-रात अनेक प्रकार की नावें किनारे के एक स्थान से दूसरे स्थान को व्यापारी सामान पहुंचाती हैं। कोई न कोई नाव ज़रूर हमारी मदद करेगी।

हमारी योजना के सफल होने में सिर्फ एक ही बाधा थी और वह थी बुरा मौसम। यहां प्रायः तूफान आया करते हैं। ऐसे तूफान में समुद्र में तैरकर भागने की कोशिश करना बुद्धिमानी नहीं थी। नेडलैण्ड भी यह बात जानता था, लेकिन वह अब बहुत अधीर हो चुका था।

ज़िन्दगी-भर के लिए मैं भी दुनिया से अपना नाता नहीं तोड़ सकता था। अब मैंने भी तय कर लिया कि मैं नेडलैण्ड की किसी योजना में बाधा उत्पन्न नहीं करूंगा और मेरे साथी यहां से भागने की जो भी योजना बनाएंगे उसमें पूरी तरह से साथ दूंगा।

अगले दिन सुबह तेज़ तूफान आया। 'नॉटिलस' अब तक समुद्र की सतह पर ही चल रही थी। तूफान के बादल जब आसमान में घिर रहे थे, तब मैं ऊपर चबूतरे पर ही था। कप्तान भी वहां खड़ा था। धीरे-धीरे तूफान तेज़ होता गया। जब तूफान के साथ पानी भी बरसने लगा तो हम लोग चबूतरे का ढक्कन बन्द करके नीचे आ गए और

'नॉटिलस' ने डुबकी मार ली। कप्तान धीरे-धीरे 'नॉटिलस' को किनारे से दूर गहरे समुद्र की ओर ले जाने लगा। इस तरह हमारी भाग निकलने की योजना फिर खटाई में पड़ गई।

कई दिनों तक 'नॉटिलस' गहरे समुद्र में ही चलती रही। कुछ दिनों बाद हम उस जगह पहुंचे, जहां से आयरलैण्ड का किनारा लगभग सात सौ मील दूर था। यहां हमने समुद्र के अन्दर अमरीका से इंग्लैंड तक बिछाया गया टेलीफोन का तार भी देखा, जो उन दिनों टूट गया था और मरम्मत का काम चल रहा था। हम लोग बराबर यह देख रहे थे कि कप्तान पिछले कई दिनों से 'नॉटिलस' को गहरे समुद्र में ही रखने की कोशिश कर रहा था। वह उसे किसी देश के किनारे के पास नहीं ले जाता था।

एक दिन नेड और कन्सील के साथ मैं चबूतरे पर खड़ा था। अचानक दूर कहीं तोप की आवाज़ आई। हमने घूरकर देखा, कई मील दूर समुद्र की सतह पर एक छोटी काली-सी चीज़ दिखाई दे रही थी। कुछ ही देर में हमें मालूम हो गया कि वह काली-सी चीज़ और कुछ नहीं, एक बड़ा लड़ाकू जहाज़ था, जो तेज़ी से हमारी ओर बढ़ रहा था। नेडलैण्ड ने चिल्लाकर कहा, "अरे, यह तो हमारी ओर ही आ रहा है। शायद इसी ने 'नॉटिलस' पर गोला फेंकने की कोशिश की हो।"

नेडलैण्ड ने मुझसे कहा, "प्रोफेसर, अगर यह जहाज़ हम लोगों से एक मील की दूरी पर आ पहुंचा तो मैं समुद्र में गोता लगा जाऊंगा। मैं आपको भी सलाह देता हूं कि आप भी ऐसा ही करें। यह जहाज़ चाहे अंग्रेज़ी हो या फ्रांसीसी, अमरीकी हो या रूसी, अगर हम लोग उसके पास पहुंच गए तो वह हमें अवश्य शरण देगा।"

मैं इसका जवाब देने ही वाला था कि जहाज़ के अगले भाग से सफेद धुआं निकला और कुछ ही सेकण्ड बाद ज़ोर की आवाज़ हुई, और एक गोला सनसनाता हुआ 'नॉटिलस' के पास ही आ गिरा।

मैंने कहा, "हम पर ये लोग फायर क्यों कर रहे हैं ?"

कन्सील ने जवाब दिया, "मैं बताऊं, हो सकता है ये लोग 'नॉटिलस' को कोई बड़ी ह्वेल मछली समझ रहे हों और इसलिए इस पर गोले चला रहे हैं।"

मेरे दिमाग को एकाएक एक सूझ मिली। हो सकता है, अब 'नॉटिलस' को कोई भयानक जीव न माना जाता हो। जब आठ महीने पहले 'नॉटिलस' ने हमारे जहाज़ 'अब्राहम लिंकन' पर आक्रमण किया था तो उस समय उसके कप्तान ज़रूर समझ गए होंगे कि यह वस्तु कोई भयानक समुद्री जीव नहीं, बल्कि समुद्र के अन्दर चलने वाली कोई पनडुब्बी है और अब वे लोग इस शक्तिशाली पनडुब्बी की प्रत्येक सागर में तलाश कर रहे होंगे।

इस बीच गोले चारों ओर बरसने लगे। 'नॉटिलस' पर अभी कोई भी गोला नहीं पहुंच सका था। इस समय वह जहाज़ इससे केवल तीन मील दूर रह गया था। कप्तान नेमो अभी तक चबूतरे पर नहीं आया था।

नेडलैण्ड ने मुझसे कहा, "प्रोफेसर साहब, अगर कोई गोला 'नॉटिलस' को लग जाएगा तो वह तो हमारे लिए मौत ही सिद्ध होगा। हमें इस मुसीबत से छुटकारा पाने का कुछ प्रयत्न करना चाहिए। हमें भी उन लोगों को सिग्नल देना चाहिए। शायद हमारा इशारा समझकर वे गोले बरसाने बन्द कर दें।"

यह कहकर नेडलैण्ड ने हवा में उड़ाने के लिए अपना रूमाल निकाला। वह उसे उड़ाने ही वाला था कि एक ज़ोर की ठोकर से वह चबूतरे पर गिर पड़ा। कप्तान उछलकर ऊपर आ पहुंचा और चिल्लाकर बोला, "दुष्ट, पाजी, क्या तू चाहता है कि उस जहाज़ से पहले मैं तुझे खत्म कर दूं ?" उसने आगे बढ़कर नेडलैण्ड को उठाकर खड़ा कर दिया और ज़ोर से उसका कन्धा झकझोरते हुए कहा, "खबरदार, आगे कभी इस तरह की हरकत मत करना, वरना मेरे आदमी तुझे गोली मार देंगे। तुम्हें पता है, यह जहाज़ मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा। असल में इस जहाज़ के सिर पर मौत मंडरा रही है। मैं घंटे-भर से दूरबीन से इसे

देख रहा हूं। यह हमारा पीछा कर रहा है और अब हम पर गोले बरसा रहा है। बेवकूफ, ये लोग समझते हैं कि इस तरह से ये 'नॉटिलस' को बरबाद कर देंगे। पता नहीं, क्यों, ये मेरे पीछे पड़े हैं। मैंने जान-बूझकर आज तक इनका कोई भी नुकसान नहीं किया है। फिर भी ये मुझे चैन से नहीं रहने देते।"

फिर उसने एक खलासी को आवाज़ देकर अपनी भाषा में कुछ कहा। और फिर उस जहाज़ की ओर मुंह करके चिल्लाकर बोला, "आओ, आज मैं तुम्हें पूरा मज़ा चखाऊंगा। मैं तुम्हें पहचानता हूं। तुम्हें पहचानने के लिए तुम्हारा झंडा देखने की मुझे ज़रूरत नहीं है। और लो, मैं तुम्हें अपना झंडा देता हूं।" और तब तक उस खलासी ने दक्षिणी ध्रुव पर लगाए झंडे की तरह का ही एक बड़ा झंडा चबूतरे पर फहरा दिया। इसी बीच एक गोला आकर 'नॉटिलस' की पूंछ पर लगा और फिर लुढ़कता हुआ पानी में जा गिरा।

कप्तान ने हम लोगों को डांटते हुए कहा, "तुम लोग यहां क्या कर रहे हो ? प्रोफेसर, अपने साथियों को लेकर नीचे जाओ।"

मैंने नीचे की ओर जाते हुए कहा, "कप्तान, क्या सचमुच तुम इस जहाज़ पर हमला करोगे ? इसके बजाय तो तुम 'नॉटिलस' को नीचे गहराई में ले जाकर कहीं दूर निकल चलो। अभी मौका है।"

कप्तान नेमो ने गरजकर कहा, "प्रोफेसर साहब, आप नीचे जाइए। आप मुझे शिक्षा मत दीजिए। मुझ पर हमला किया गया है और मैं इसका जवाब ज़रूर दूंगा। मैं नहीं चाहता था कि ऐसी कोई घटना आपके सामने हो। आपको जो नहीं देखना था, वह आपके भाग्य ने अब आपको दिखा दिया है। अब आप देखिए कि मैं कैसे इस जहाज़ को कागज़ की नाव की तरह मिनटों में खत्म करता हूं।"

'नॉटिलस' ने अपनी सर्च-लाइट की रोशनी खूब तेज़ कर रखी थी। लेकिन रात में कोई घटना नहीं घटी।

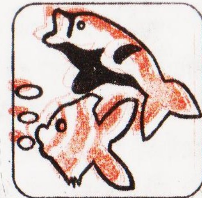
सुबह पांच बजे कुछ आवाज़ सुनकर मेरी नींद खुल गई। मैं दौड़कर

लाइब्रेरी में पहुंचा। तब तक नेडलैण्ड और कन्सील भी वहां आ पहुंचे। हम लोगों ने तय किया कि लड़ाई शुरू हो, उसके पहले ही किसी तरह हम 'नॉटिलस' से निकल भागें। लेकिन भागने का कोई रास्ता नहीं था। ऊपर चबूतरे पर कप्तान अब भी मौजूद था। फिर ज़ोर की आवाज़ हुई और कप्तान अपने साथियों के साथ दौड़कर ज़ीने से नीचे उतर आया और ऊपर दरवाज़ा बन्द कर दिया।

टंकियों में हवा भरी जाने लगी और कुछ ही मिनटों में 'नॉटिलस' समुद्र की सतह को छोड़कर नीचे कई गज़ पानी में समा गई।

मुझे यह समझते देर नहीं लगी कि कप्तान उस जहाज़ पर समुद्र की सतह से नहीं, बल्कि नीचे से हमला करना चाहता है, क्योंकि उस जहाज़ का नीचे का भाग लोहे से ढका नहीं होगा। इसी बीच 'नॉटिलस' की चाल बहुत तेज़ हो गई। फिर थोड़ी देर बाद एक धक्का लगा। धक्का हल्का था, लेकिन मुझे लगा कि 'नॉटिलस' का आगे का नुकीला भाग उस जहाज़ के पेंदे में ज़ोर से घुस रहा है। मैं दौड़कर कप्तान के कमरे पहुंचा। कप्तान वहां चुपचाप खड़ा खिड़की से देख रहा था। पानी के अन्दर सर्चलाइट की रोशनी हो रही थी। मैंने देखा, हमारे ठीक सामने, लगभग तीस फुट दूर वह जहाज़ डूब रहा था। उसमें तेज़ी से पानी घुस रहा था। पानी बराबर ऊंचा उठता जा रहा था। जहाज़ के लोग डेक पर जमा हो गये थे और हड़बड़ी में कूद रहे थे। कुछ लोग मस्तूलों पर चढ़ने की कोशिश कर रहे थे। कप्तान 'नॉटिलस' में से उस जहाज़ की सारी हरकतें देखता रहा। देखते-देखते जहाज़ पानी में पूरा डूब गया। उसकी चोटी पर अब भी कुछ आदमी दिखाई पड़ रहे थे। अन्त में उसके खास मस्तूल की चोटी भी डूब गई। जहाज़ को उसके खलासियों और नीचे यात्रियों के साथ एक बड़ी भंवर ने नीचे खींच लिया।

मैं कप्तान की ओर मुड़ा। वह अब भी चुपचाप खड़ा था। जब सारा दृश्य समाप्त हो गया तो वह अपने सोने के कमरे में चला गया।



8

उस रात इस भयानक घटना के बाद 'नॉटिलस' की खिड़कियां बन्द कर दी गईं। न तो लाइब्रेरी में रोशनी थी और न सैलून में। 'नॉटिलस' में विचित्र प्रकार की शांति और अन्धकार छाया हुआ था। वह बड़ी तेज़ी से दुर्घटना का स्थान छोड़ रही थी। हमें काफी देर तक यह पता नहीं चल सका कि 'नॉटिलस' कहां जा रही थी—उत्तर की ओर या दक्षिण की ओर ! इतना भयानक हत्याकांड करके कप्तान कहां भागा जा रहा था ?

मैं अपने कमरे में वापस चला गया। वहां कन्सील और नेडलैण्ड शांत खड़े मेरी राह देख रहे थे। दोनों बहुत गंभीर थे। हमें कप्तान नेमो से बहुत शिकायत थी। आज जो कुछ हुआ था, उसे याद करके हमारे रोंगटे खड़े हो जाते थे। 'नॉटिलस' का चाहे जितना नुकसान हुआ हो, उसे ऐसा बुरा काम नहीं करना चाहिए था और उस जहाज़ ने ऐसा उसका नुकसान भी क्या किया था !

11 बजे फिर रोशनी आ गई। मैं कमरे से निकलकर सैलून में गया। वहां कोई नहीं था। मैंने आगे बढ़कर विभिन्न यंत्रों से अपनी स्थिति का पता लगाया। 'नॉटिलस' उत्तर की ओर जा रही थी। वह 52 मील प्रतिघंटा की चाल से भाग रही थी। कभी वह समुद्र की सतह पर चलती थी तो कभी तीस फुट नीचे चलने लगती थी। शायद अब तक 'नॉटिलस' इंग्लिश चैनल को पार करके उत्तर की ओर बढ़ आई थी।

मैं लौटकर अपने कमरे में आ गया और सोने की कोशिश करने लगा। लेकिन मुझे काफी देर तक नींद नहीं आई। मेरा दिमाग वही

दृश्य बार-बार याद कर रहा था। फिर पता नहीं, कब मैं सो गया।

कुछ दिनों बाद एक दिन सुबह, तारीख मुझे याद नहीं, मैं गहरी नींद में सोया पड़ा था। अचानक किसी ने झकझोरकर मुझे जगा दिया। मैंने आंख खोलकर देखा, नेडलैण्ड मेरे ऊपर झुका हुआ था। उसने मेरे कान में फुसफुसाकर कहा, ''प्रोफेसर, हम लोग भाग रहे हैं।''

मैं उठकर बैठ गया। थोड़ी देर मैं उसकी ओर देखता रहा। फिर मैंने पूछा, ''कब ?''

नेडलैण्ड ने फुसफुसाकर कहा, ''आज ही रात को !''

'' 'नॉटिलस' के सभी खलासी और कप्तान गोताखोरी के कपड़े पहनकर पता नहीं कहां गए हैं। मैंने इंजिन-रूम में नहीं देखा। शायद वहां कोई खलासी होगा। इस समय वैसे चारों तरफ शांति है। अच्छा, मैं चलता हूं। आप रात को तैयार रहेंगे न ?''

''हां, लेकिन हम इस समय हैं कहां ? कुछ पता है ?''

''मुझे ठीक-ठीक पता नहीं। बाहर कोहरा छाया हुआ है। लेकिन ऐसा लगता है कि यहां से बीस मील पूर्व शायद ज़मीन है।''

''वह कौन-सा देश है ? कुछ पता तो लगाओ ?''

''पता नहीं कौन-सा देश है। लेकिन इससे क्या ? हमें वहां शरण तो मिल ही जाएगी।

''अच्छा नेड, आज रात को हम लोग ज़रूर भाग निकलेंगे। चाहे समुद्र हमें निगल ही क्यों न जाए !''

''प्रोफेसर, समुद्र आज अशांत है। लगता है तूफान आनेवाला है। हवा तेज़ चल रही है। लेकिन 'नॉटिलस' की नाव में बीस मील तक भाग निकलना कोई मुश्किल काम नहीं है। मैंने नाव में कुछ खाना और पानी की बोतलें रख ली हैं। अभी तक किसी खलासी को इसका पता नहीं चल सका है। कन्सील शायद अब भी नाव में ज़रूरी सामान पहुंचा रहा है।'' यह कहकर नेडलैण्ड वहां से चला गया। थोड़ी देर बाद उठकर मैं कमरे से बाहर निकला और फिर ऊपर चबूतरे पर पहुंचा। हवा सचमुच

बहुत तेज़ चल रही थी। वहां खड़े रहना मुश्किल हो रहा था। आकाश में कुछ बादल भी घिर रहे थे और लगता था कि आज ज़रूर तूफान आएगा। लेकिन बीस मील भागना कोई मुश्किल बात नहीं थी।

मुझे 'नॉटिलस' का यह अंतिम दिन कितना बड़ा लग रहा था। मैं अकेला रह गया था। नेडलैण्ड और कन्सील तैयारी में लगे हुए थे। शाम तक कप्तान या कोई खलासी मुझे नहीं दिखाई दिया। वे लोग लौट आए थे या नहीं, यह भी मुझे पता नहीं था, क्योंकि मैं दिन-भर अपने कमरे में ही बन्द रहा। शाम को लगभग साढ़े तीन बजे नेडलैण्ड मेरे कमरे में आया। वह बहुत जल्दी में था और फुसफुसाकर ही बोल रहा था। उसने कहा, ''अब हम लोग चलने से पहले आपस में मिल नहीं सकेंगे। पूरी तैयारी हो गई है। हम लोग 10 बजे चलेंगे। तब तक चन्द्रमा भी नहीं निकलेगा।''

मैं कुछ समय तक लाइब्रेरी में रहा और वहां रखी मूल्यवान वस्तुओं को देखता रहा। मैंने सोचा कि ये सभी चीज़ें एक दिन 'नॉटिलस' के साथ इसी समुद्र में समा जाएंगी। कुछ देर तक किताबों को उलटने-पलटने के बाद मैं अपने कमरे में चला आया।

मैंने अपनी पोशाक पहन ली और इस यात्रा में तैयार की हुई अपनी डायरी भी सुरक्षित रख ली, मेरा दिल ज़ोरों से धड़क रहा था। मैं यह सोचकर घबरा रहा था कि अगर कप्तान ने मुझे देख लिया तो क्या होगा ! मुझे इस वेश में देखकर ज़रूर उसे कुछ शक हो जाएगा। मैं चुपके से उसके कमरे के पास दरवाज़े पर जा पहुंचा और कान लगाकर सुनने लगा।

मुझे कमरे में उसके पैरों की आवाज़ सुनाई दी। वह वहां मौजूद था और शायद धीरे-धीरे टहल रहा था।

वहां से आकर मैं चुपचाप अपने कमरे का दरवाज़ा बन्द करके बिस्तर पर लेट गया। 'नॉटिलस' की यात्रा में अब तक हुई घटनाओं के चित्र एक-एक करके मुझे याद आने लगे। धीरे-धीरे साढ़े नौ बज

गए। अब भागने में सिर्फ आधा घंटा बाकी था। मेरी घबराहट बराबर बढ़ती जा रही थी। अचानक 'नॉटिलस' में संगीत का स्वर गूजने लगा। कप्तान नेमो अपने कमरे में पियानो बजा रहा था। 10 बजते ही मैं उछलकर अपने बिस्तर से उठा और पांव दबाकर चुपचाप बाहर आ गया। कप्तान के कमरे से अब भी पियानो की आवाज़ आ रही थी। मैं जल्दी-जल्दी लाइब्रेरी पार करके गलियारे में निकला और लोगों की नज़र बचाता हुआ ऊपर जा पहुंचा। मेरे दोनों साथी वहां मेरा इन्तज़ार कर रहे थे। मैंने कहा, ''क्या हाल है ? अब क्या देर है ?''

नेडलैण्ड ने जवाब दिया, ''बस, अब फौरन ही हमें यहां से चल देना चाहिए।'' वह अपने साथ रिंच, पेचकस ले आया था। उसने जल्दी से 'नॉटिलस' और नाव के बीच दरवाज़ा बन्द कर दिया। फिर वह नाव को 'नॉटिलस' से जोड़ने वाले बोल्ट खोलने लगा।

अचानक हमें अन्दर कुछ आवाज़ सुनाई दी। ऐसा लगा जैसे कुछ खलासी आपस में ज़ोर-ज़ोर से कुछ बहस कर रहे हों और एक-दूसरे को जल्दी-जल्दी जवाब दे रहे हों।

कन्सील बोला, ''क्या मामला है ? क्या इन लोगों को हमारे भागने का रहस्य मालूम हो गया है ?''

इसी बीच नेडलैण्ड ने एक छुरा मेरे हाथ में दिया। फिर वह सावधानी से बोल्ट खोलने लगा। बीच-बीच में रुक जाता और कान लगाकर सुनने की कोशिश करने लगता। पता नहीं क्या बात थी हम लोगों से बोल्ट खुल ही नहीं पा रहा था। इस बीच 'नॉटिलस' में शोर बढ़ता जा रहा था। हम लोगों ने अनुमान लगाया। शायद वे भंवर, समुद्री भंवर, या ऐसा ही कुछ कह रहे थे।

कुछ ही देर में मालूम हो गया कि हमारा अनुमान सही था। 'नॉटिलस' गहरे समुद्री भंवर में फंस गई थी। हमें मालूम था कि उत्तर की ओर लोफोडीन द्वीपों के बीच दो समुद्री धाराएं बहुत तेज़ी से निकलती हैं। उनसे एक बड़ी भंवर बन जाती है। इस भंवर से आज तक कोई

जहाज़ बचकर नहीं निकला था। कप्तान नेमो जान-बूझकर या गलती से 'नॉटिलस' को यहां ले आया था। देखते-देखते 'नॉटिलस' बड़ी तेज़ी से चक्कर खाने लगी।

हमारी नाव अब भी 'नॉटिलस' से अलग नहीं हो पाई थी। हम लोग बुरी तरह घबरा गए। चक्कर खाते हुए पानी की आवाज़ बढ़ती जा रही थी। 'नॉटिलस' इस भंवर में फंस गई थी और इससे निकलने की कोशिश कर रही थी। लेकिन पानी का दबाव इतना ज़्यादा था कि वह भंवर से बाहर निकल नहीं पा रही थी। उसकी लोहे की चद्दरें चटखने लगी थीं। वह सीधी ऊपर की ओर खड़ी हो जाती थी और हम भी उसी के साथ ऊपर उठ जाते थे।

नेडलैण्ड ने कहा, ''हमें पेच फिर से कसकर 'नॉटिलस' को मज़बूती से पकड़ लेना चाहिए। 'नॉटिलस' के साथ रहने से हम शायद बच जाएंगे। क्यों प्रोफेसर साहब, आपकी क्या राय है ?''

मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। लेकिन नेडलैण्ड ने अभी अपनी बात पूरी भी नहीं की थी कि एक ज़ोर का झटका लगा। बोल्ट टूट गया और नाव छिटककर 'नॉटिलस' से दूर जा पड़ी। मेरा सिर नाव की लोहे की दीवार में टकरा गया। चोट के कारण मैं बेहोश हो गया।

पता नहीं मैं कब तक बेहोश रहा। मेरे साथियों का क्या हाल हुआ। बाद में कैसे नाव उस समुद्री भंवर के चक्करों से बाहर निकली। 'नॉटिलस' का क्या हुआ। नेडलैण्ड, कन्सील और मैं—हम तीनों साथी किस प्रकार उस खाड़ी से बाहर निकले, इसका मुझे कुछ पता नहीं।

जब मुझे होश आया तो मैं लोफोडीन द्वीप के एक मछियारे की झोंपड़ी में लेटा था। मेरे दोनों साथी भी मेरे पास ही बैठे थे और मेरे हाथ दबा रहे थे। उन्हें भी यह पता नहीं था कि उनकी नाव कैसे बची। कुछ मछियारों ने किस तरह हमें खींचकर पानी से बाहर निकाला और किस तरह हम इस झोंपड़ी में पहुंचे—यह हम ठीक-ठीक कभी-भी जान नहीं सकेंगे।

यह स्थान नार्वे के पास था। उन दिनों उत्तरी नार्वे और दक्षिणी नार्वे के बीच आने-जाने के साधन बहुत कम थे। हमें कई दिनों तक स्टीमर की राह देखनी पड़ी। बाद में मैंने उस द्वीप के निवासियों को अपनी यात्रा का पूरा हाल सुनाया। न तो मैंने कुछ घटाया और न कोई चीज़ बढ़ाकर ही कही। मैंने उन्हें वही सब कुछ बताया, जो आज मैं यहां लिख रहा हूं।

लेकिन 'नॉटिलस' का क्या हुआ ? क्या वह उस समुद्री भंवर के दबाव से अपनी रक्षा कर सकी ? क्या कप्तान नेमो अब भी ज़िन्दा है ? क्या कभी दुनिया को उस आदमी के बारे में पूरी-पूरी बातें मालूम हो सकेंगी ? वह कौन था, किस देश का रहनेवाला था, और अपनी विचित्र पनडुब्बी के साथ कहां चला गया ? कुछ पता नहीं। आज तक कोई पता नहीं लगा सका।

•••

ज्ञान-विज्ञान पुस्तकमाला

सितारों की कहानी
बिजली की कहानी
आग की कहानी (पुरस्कृत)
घड़ी की कहानी
रोमांचकारी वैज्ञानिक यात्राएं
इलैक्ट्रानिक की कहानी
पानी (पुरस्कृत)
हवा के चमत्कार
एटम की कहानी
आवाज की दुनिया

'आविष्कारक और आविष्कार' पुस्तकमाला

संसार के प्रसिद्ध वैज्ञानिक
महान वैज्ञानिक बेंजामिन फ्रैंकलिन
एडीसन की कहानी
संसार के प्रसिद्ध अविष्कारक
फ़ेर्मी की कहानी
फ़िनले मोर्स की कहानी
संसार के प्रसिद्ध खोजी

विज्ञान भारती : एक नई पुस्तकमाला

आधुनिक विज्ञान से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर बड़े साइज़ में, बढ़िया कागज़ पर मुद्रित एवं बहुरंगी कलापूर्ण चित्रों से सुसज्जित पुस्तकें.

वायु और जल
चुम्बक
ध्वनि
समय
प्रसिद्ध वैज्ञानिक
प्रकाश और रंग
गति की कहानी
विज्ञान की बातें
बुनियादी आविष्कार



राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-6

किशोरों के लिए उपन्यास

गुलिवर की यात्राएं (Gulliver's Travels) (पुरस्कृत)
रॉबिन्सन क्रूसो (Robinson Crusoe) (पुरस्कृत)
ख़ज़ाने की खोज में (Treasure Island) (पुरस्कृत)
चांदी का बटन (Kidnapped)
कठपुतला (Pinnochio) (पुरस्कृत)
वीर सिपाही (Ivanhoe)
चमत्कारी ताबीज़ (Talisman)
तीसमार ख़ां (Don Quixote)
तीन तिलंगे (Three Musketeers)
क़ैदी की करामात (Count of Monte Christo)
डेविड कॉपरफील्ड (David Copperfield)
बर्फ़ की रानी (Anderson's Fairy Tales)
रॉबिनहुड (Robinhood)
जादू का दीपक (Stories from Arabian Nights)
अस्सी दिन में दुनिया की सैर (Around the World in 80 Days)
जादूनगरी (Alice in Wonderland)
मूंगे का द्वीप (Coral Island)
बहादुर टॉम (Tom Sawyer)
परियों की कहानियां (Grimm's Fairy Tales)
सिंदबाद की सात यात्राएं (The Seven Voyages of Sindbad)
ईसप की कहानियां (Aesop's Fables)
मोबी डिक (Moby Dick)
जंगल की कहानी (Call of the Wild)
काला घोड़ा (Black Beauty)
अद्भुत द्वीप (Swiss Family Robinson)
काला फूल (Black Tulip)
समुद्री दुनिया की रोमांचकारी यात्राएं (20,000 Leagues Under the Sea)


ISBN 81-7483-010-1
9788174830104

शिक्षा  भारती